हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 12 अक्टूबर, 2025

11 पराली का प्रबंधन करने से बढ़ती है मिट्टी उर्वरा...

11 शिक्षित बनने व लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती...

खबर संक्षेप

रंगोली प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन

भिवानी। हलवासिया विद्या विहार के प्राथमिक विभाग में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में दीया सजावट, तोरण निर्माण एवं रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन बड़े उत्साह और उल्लास के साथ किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा तृतीय से पंचम तक के लगभग 300 विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लेकर अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का सुंदर प्रदर्शन किया।

गांव कारी में युवती को सांप ने डसा, मौत

बाढड़ा। गांव कारी निवासी धर्मवीर फोगाट की छह वर्षीय पोती दिशू की कोबरा सांप के काटने से दर्दनाक मृत्यु हो गई। घटना के बाद स्वजनों में शोक की लहर व भय का माहौल बना हुआ है। गांव कारी निवासी दिशू रात्रि को स्वजनों के साथ बेड पर सोई हुई थी। रात करीब एक बजे अचानक दिशू तेज़ दर्द से चीख उठी।घबराए हुए परिजन तुरंत उसके पास पहुँचे, तो उसने बताया कि उसे बहुत तेज दर्द हो रहा है। बिना एक पल की देर किए, परिवारजन उसे लेकर अस्पताल पहुंचे जहां जांच के बाद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

धर्मपाल सैनी की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर आज

भिवानी। नेत्रदाता स्व. धर्मपाल सैनी की पुण्यतिथि पर सैनी कल्याण परिषद द्वारा 12 अक्तूबर को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सैनी कल्याण परिषद के उपप्रधान ओमप्रकाश सैनी ने बताया कि उनके पिता नेत्रदाता स्व. धर्मपाल सैनी की 8वीं पुण्यतिथ पर रक्तदान शिविर स्थानीय चौ. बंसीलाल नागरिक अस्पताल स्थित ब्लड बैंक में सुबह 9 बजे से आयोजित किया जाएगा।

हुडा 33 केवी सब स्टेशन की बिजली दो बजे तक बंद

भिवानी। रविवार 12 अक्टूबर को 33केवी सब स्टेशन हुडा से चलनी वाली लाइन दोपहर दो बजे से शाम छह बजे तक बंद रहेंगी, जिसके चलते इसके अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों की बिजली सप्लाई पूर्णरूप से बंद रहेगी। जेई पवन कुमार ने बताया कि रविवार 12 अक्टूबर को 33केवी सब स्टेशन हुडा लाइन पर मरम्मत कार्य किया जाना हैं, जिसकी वजह से इसके अंतर्गत आने वाले सेक्टर 13, 23 , पटेल नगर, विद्या नगर, राजीव कॉलोनी, इंदिरा कॉलोनी की बिजली बंद रहेगी।

जनस्वास्थ्य, सिंचाई व पीडब्ल्यूडी विभाग के कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

तीन विभागों के कर्मचारियों ने सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के आवास का किया घेराव

तीनों विभागों के कच्चे व पक्के लगभग 35 हजार कर्मचारियों के पदों को रेशनेलाईजेशन के नाम पर समाप्त किए जाने का जताया विरोध

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। मांगों को लेकर मंत्री श्रुति चौधरी के आवास की तरफ जाते कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

रेशनेलाईजेशन के नाम पर हरियाणा प्रदेश के तीन विभागों सिंचाई विभाग, जनस्वास्थ्य विभाग व पीडब्ल्यूडी विभाग के लगभग 35 हजार कर्मचारियों के पद कम किए जाने के विरोध में आज भिवानी में प्रदेश भर से जुड़े तीनों विभागों के कर्मचारियों ने लांबबद्ध होकर जोरदार प्रदर्शन किया तथा भिवानी के विजय नगर स्थित सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के आवास का घेराव किया। कर्मचारी नेताओं ने नारेबाजी करते हुए जून महीने में सरकार द्वारा लिए गए इस फैसले को वापिस लेने की मांग की तथा राज्य सरकार को चेताया कि यदि उनके फैसले को नहीं माना गया तो वे भविष्य में अनिश्चितकालीन धरने पर बैठेंगे। हरियाणा गर्वमेंट पीडब्लयूडी मेकेनिकल वर्कर्स यूनियन संबंध सर्व कर्मचारी संघ के बैनर तले आज हरियाणा प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए सिंचाई, जनस्वास्थ्य व पीडब्ल्यूडी विभाग के कर्मचारियों ने आज के सिंचाई मंत्री आवास के घेराव में हिस्सा लिया। इस मौके पर यूनियन के राज्य प्रधान गंगाराम गौण व महासचिव जरनैल सिंह ने बताया कि राज्य सरकार एक तरफ तो जनसुविधाओं के बढ़ावा देने की बात कहती है, वही दूसरी तरफ तीन विभागों के 35 हजार के लगभग पदों को समाप्त करने जा रही है। जिनमें 24 हजार के करीब पद स्थाई है। उन्होंने कहा कि वही पीडब्ल्यूडी बीएंडआर विभाग के 14 हजार 336 पदों में से 8 हजार 269 पदों को समाप्त कर 6 हजार 67 पदों को रखना चाहती है। इसी प्रकार सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के विभाग में स्वीकृत 19 हजार 682 पदों में से 7398 पदों को समाप्त कर 12 हजार 283 पदों को सरकार रखना चाहती है। इस प्रकार कच्चे व पक्के कर्मचारियों को मिलाकर कुल 35 हजार के लगभग पद राज्य सरकार समाप्त करना चाहती है। जिसको कर्मचारी संगठन बिल्कुल भी समाप्त नहीं होने देंगे।

रेशनेलाईजेशन के नाम जनस्वास्थ्य विभाग के स्वीकृत 14 हजार 600 पदों में से 8 हजार 269 पदों की कटौती कर कुल 7833 पद सरकार रखना चाहती है।

यह हैं प्रमुख मांगें

यह लगाया आरोप

कर्मचारी नेताओं ने कहा कि रेशनेलाईजेशन के नाम पर ग्रुप सी व डी के कर्मचारियों के पदों को समाप्त कर तीनों विभागों को सिकोडने का प्रयास सहन नहीं किया जाएगा। सिंचाई विभाग, कैनाल गार्ड, मैट आदि पदों के कर्मचारियों को योग्यता अनुसार तृतय श्रेणी का दर्जा नहीं दिया जा रहा, इसकी भी मांग वे आज करते है। उन्होंने कहा कि समय के साथ जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हुई है, ऐसे में पदों को बढ़ाया जाना चाहिए, ना कि घटाया जाना। उन्होंने कहा कि कच्चे कर्मचारियों के लिए पॉलिसी बनाकर राज्य सरकार नियमतीकरण करे, ताकि सभी को सेवा-सुरक्षा के दायरे में लाकर कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित किया जा सकें। कर्मचारी नेताओं ने चेताया कि यदि उनकी मांग नहीं मानी तो आने वाले समय में सरकार के खिलाफ बड़े प्रदर्शन होंगे। इस मौके पर प्रदेश भर से आए कर्मचारियों ने सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के आवास के बाहर सैंकड़ों की संख्या में धरना दिया तथा श्रुति चौधरी से जल्द ही मुलाकात करवाए जाने व उनकी मांगें सुने जाने की बात कही तथा रेशनेलाईजेशन के नाम पर पदों को वापिस किए जाने की बात दोहराई।

भिवानी। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते हुए। फोटो: हरिभूमि

जनसंघर्ष समिति लोगों के साथ मेदान में

समस्याओं के समाधान की मांग को प्रदर्शन

■ सैक्टर-23 में बीच सडक़ के ठप्प सीवरेज व्यवस्था को ठीक करवाने व शीघ्र सडक़ बनवाने की मांग को लेकर किया प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

जनसंघर्ष समिति भिवानी के नेतृत्व में सैक्टर-23 के निवासियों ने बीच में पडऩे वाली बड़ी व चौड़ी गली के ठप्प सीवरेज व्यवस्था को दुरस्त करने व शीघ्र पक्की सडक़ बनाने की मांग को लेकर हुड्डा प्रशासन व जिला प्रशासन की लापरवाही के विरोध में जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए जनसंघर्ष समिति के जिला संयोजक कामरेड ओमप्रकाश व सैक्टर निवासी अधिवक्ता मीना जांगड़ा ने कहा कि इस गली के निवासी पिछले साढ़े चार महीने से भारी परेशान व दुखी है।

शिकायत के बाद भी नहीं हुआ समाधान

उन्होंने कहा कि स्थानीय नागरिकों व सैक्टर एसोसिएशन के प्रधान सज्जन कुमार सिंगला द्वारा हुडा प्रशासन व जिला प्रशासन को लिखित व मौखिक रूप से अवगत कराने के बाद भी वे सैक्टरवासियों की समस्या का समाधान नहीं कर रहे हैं। उन्होंने हुडा प्रशासन व जिला प्रशासन से मांग की है कि शीघ्र ठप्प सीवरेज व्यवस्था को दुरस्त किया जाए तथा संबन्धित ठेकेदार को आदेश देकर जल्दी रोड़ बनवाया जाए। इस दौरान कामरेड ओम प्रकाश ने हुडा जेई करुण जांगड़ा से बात की कि वे शीघ्र सीवरेज व्यवस्था को ठीक करवाएं। उन्होंने टेलिफोन बातचीत में आश्वासन दिया है कि वह दो दिनों में सीवरेज व्यवस्था को ठीक करवा देंगें। कामरेड ओमप्रकाश ने आरोप लगाया कि विधायक व नगर परिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि जनता की समस्याओं की अनदेखी करते हैं।

गोशाला मार्केट में बना बाथरूम

■ विधायक सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने शुरु करवाया कार्य

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

विधायक घनश्याम सर्राफ नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से गौशाला मार्केट में श्री गौशाला ट्रस्ट द्वारा निर्मित बाथरूम का उदघाटन किया। साथ ही उन्होंने विद्यानगर कॉलोनी में कच्ची गली को पक्का बनवाए जाने के कार्य का नारियल फोडकर शुभारंभ करवाया। इस दौरान वहां पर मौजूद लोगों का विधायक घनश्याम सर्राफ व भवानी प्रताप सिंह ने मुंह मीठा करवाया। गौशाला मार्केट में बाथरूम बनने के बाद लोगों को सुविधा मिलेगा। चूंकि पिछले कई वर्षो से उक्त इलाके के दुकानदारों की यह मांग थी। आज यह मांग उनकी पूरी हुई। दूसरी तरफ विद्यानगर में कई दिनों से उक्त गली जर्जर थी। जिस वजह से लोगों को आने व जाने में अनेक तरह की समस्याएं उठानी पड़ रही थी। आज इस गली का विधायक सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि ने नारियल फोड़कर कार्य शुरू करवाया है। जिसका कार्य पूरा होने के बाद लोगों को जबरदस्त फायदा होगा। दोनों कार्य पूरे होने के चलते लोगों में खुशी का माहौल बना है। नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने मार्केट के दुकानदारों से आहवान किया कि वे जगह-जगह कूड़ा कचरा न डाले,बल्कि मार्केट के लिए एक ऑटो लगाया गया है। वह ऑटो रोजाना सुबह साढे नौ व दस बजे के बीच आएगा और बाजार में घुम कर कूड़ा कचरा एकत्रित करेगा। ऑटो में कचरा डाले जाने के बाद मार्केट में स्वच्छता बनी रहेगी। उन्होंने बताया कि विद्यानगर कॉलोनी में एक गली को पक्का करवाए जाने के कार्य का शुभारंभ करवाया गया है। ताकि लोगों को सहुलियत मिल सके। इनके अलावा अभी तक नगरपरिषद ने 14 शौचालयों का निर्माण करवाया गया है। कुछेक का निर्माण कार्य जारी है।

मार्केट में सभी सुविधाएं मिलेगी : सर्राफ

विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि गौशाला ट्रस्ट के दुकानदारों को सभी सुविधाएं दी जाएगी। दुकानों के उपर दुकानें बनाए जाने या दुकानों की छतों की रिपेयर करवाने का कार्य करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए सरकारी खजाने लबालब है। बशर्ते जनता सार्वजनिक कार्य लेकर आए। उनको प्राथमिकता के आधार पर करवाया जाएगा।

नरकीय जीवन जी रहे बवाली खेड़ा के लोग

■ शहर के वार्ड संख्या छह व सात में जलभराव की समस्या पूर बरह से हो गई गंभीर

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

बवानी खेड़ा कस्बे में बारिश के बाद वार्ड संख्या 6 व सात में जलभराव की समस्या गंभीर हो गई है। विगत दिनों हुई वर्षा के कारण यहां की गलियां और सड़कें व घर पानी में डूब हुऐं हैं, जिससे लोगों का दैनिक जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। घरों व गलियों पर जमा गंदा पानी कई दिनों बाद भी नहीं सूख पाया है। घरों के चारों ओर तालाब भी लबालब भरे है। जलभराव के कारण लोगों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। राहगीर ईंट-पत्थर रखकर किसी तरह गलियों से गुजर रहे हैं। जगह-जगह फिसलन होने से गिरने और चोट लगने का खतरा बना हुआ है। स्कूली बच्चों और महिलाओं को विशेष रूप से दिक्कत हो रही है, क्योंकि उन्हें गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है, जिससे संक्रमण और बीमारियों का जोखिम बढ़ गया है। कस्बे के अम्बेडकर समाज सेवा समिति के प्रधान रामबीर गौरी हरियाणा जाग्रति मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू पार्षद प्रतिनिधि विनोद भौरियां सुरेश मास्टर संजय गौरियां मोनू गौरियां अमीत दहियां एडवोकेट ने बताया कि यह समस्या नई नहीं है, बल्कि पिछले दो महिने से बनी हुई है।

भिवानी। तालाबों में जमा सीवर के पानी में घुसकर पम्प चलाने का प्रयास करते हुए।

घरों में जमा हुआ पानी

उनके अनुसार, जलभराव जो घरों में गलियों में हुआ हुआ है उसका समाधान शासन व प्रशासन द्वारा नही किया गया है तीन रोज पूर्व तीर्थ तालाब का पानी उठाकर दूसरे तालाब के पार्ट में डालकर किया था, वह किन्ही कारणों से पूरा ना हुआ आज फिर जलभराव से प्रभावित लोगों , पूर्व पार्षद हालिया पार्षद तथा समाज सेवी संगठनों ने अपने स्तर पर पूर्न प्रयास किया लोकिन सफलता ना मिलने की सुरत में नगरपालिका के प्रधान सुंदर अत्री तथा एस डी ओ पब्लिक हैल्थ से टेलीफोन पर बात कर समास्या से निजात दिला गरीब लोगों को उनके घरों में घुसे पानी को जल्द बाहर करने के लिए कहा जिस उन्होंने एक दिन बाद समास्या का समाधान करने का आश्वासन दिया है । उधर स्थानीय लोगों का कहना है कि उन्होंने जलभराव की इस समस्या से निजात पाने के लिए नगर पालिका ,शासन व प प्रशासन के संबंधित विभागों को कई बार शिकायतें दी हैं। हालांकि, हर बार उन्हें केवल आश्वासन ही मिला है। जिम्मेदार अधिकारी और स्थानीय विधायक इस गंभीर मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए हैं। लोगों ने जल्द से जल्द जलनिकासी की उचित व्यवस्था करने की मांगी की है। इस मौके आजाद गौरियां, सतबीर पूर्व फायर मैन, रणबीर ,सतपाल , सुरेन्द्र टेलर , सत्यवान मिस्त्री , भोला, बिल्लू ,संदीप गौरी , अजय, किताब सिंह आदि थे।

कार्यक्रम में मनोनीत पार्षदों ने ली शपथ, नगरपालिका को साफ-सुथरा बनाने का लिया संकल्प

नवनिर्वाचित नपा उपप्रधान पूजा सैनी का कार्यालय में किया भव्य स्वागत

नपा सचिव तेजपाल सिंह ने मनोनीत पार्षदों और नपा उपप्रधान को बधाई दी

हरिभूमि न्यूज ⏭लोहारू

एक पखवाड़ा पहले सर्वसम्मति से लोहारू नगरपालिका की प्रथम महिला उप प्रधान चुनने का गौरव हासिल करने वाली वार्ड न. 11 की पार्षद पूजा सैनी के सम्मान में नगरपालिका कार्यालय परिसर में स्वागत समारोह आयोजित किया गया। जिसमें नगर पालिका प्रधान प्रदीप तायल और सभी पार्षदों ने नगर पालिका सचिव तेजपाल सिंह की मौजूदगी में उनका स्वागत किया और उन्हें बधाई दी।

लोहारू। लोहारू में नव निर्वाचित नपा उप प्रधान पूजा सैनी के स्वागत समारोह में पहुंचे लोग पूजा सैनी को बधाई देते हुए।

वूजा सैनी ने स्वागत समारोह के लिए सभी पार्षदों और कार्यक्रम में पहुंचे लोगों का आभार प्रकट किया। इस दौरान सभी पार्षदों और शहर के अनेक गणमान्य लोगों ने पूजा सैनी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। नपा सचिव तेजपाल सिंह ने मनोनीत पार्षदों और नपा उपप्रधान पूजा सैनी को बधाई दी।

शपथ समारोह में विकास पर जोर

कार्यक्रम के दौरान मनोनीत पार्षद विजेंद्र सिंह और रामसिंह कटारिया को प्रधान प्रदीप तायल ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। दोनों पार्षदों ने कहा कि वे लोहारू शहर के सभी वार्ड पार्षदों, नगर पालिका प्रधान व उप प्रधान के साथ मिलकर वार्डों के विकास में सहयोग करेंगे। शहर के समुचित विकास से ही शहर के लोगों का कल्याण होगा।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

नव निर्वाचित नगर पालिका उप प्रधान पूजा सैनी के स्वागत कार्यक्रम में नपा सचिव तेजपाल सिंह, लेखाकार सूर्य दत्त तिवारी, पार्षद पूजा, पार्षद राजेश सैनी, संजू कुमारी, प्रीति, संतलाल, रवि अग्रवाल, जयसिंह सैनी, दिव्या सैनी, अजय शर्मा, अंतर सिंह, मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन सुभाष सैनी, व्यापार मंडल प्रधान धनपत सैनी, कृष्ण टीकेवाला, बलवंत सिंह, बलवान जांगड़ा, रोहताश लांबा, विपिन सैनी, प्रवीण जोशी, महेंद्र कथूरिया, राजेंद्र सिंह, नवीन कुमार, रवि कुमार, अश्वनी सैनी, नरेश बड़सीवाल, रामबीर, सुरेंद्र सैनी, राजकुमार सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

आईपीएस की मौत की जांच की मांग

■ दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढड़ा

किसान सभा व सीटू की अगुवाई में सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने कस्बे में बैठक आयोजित कर एसडीएम के माध्यम से राज्यपाल को ज्ञापन भेजकर आईपीएस वाई पूर्ण कुमार की आत्महत्या मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की मांग की। किसान सभा प्रधान नसीब कारी मोद की अध्यक्षता में बैठक को संबोधित करते हुए जिला प्रधान किसान सभा रणधीर कुंगड ने संस्थागत हत्या की निष्पक्ष जांच करवाने, जातिगत भेदभाव के खिलाफ तत्काल कदम उठाने की मांग की।

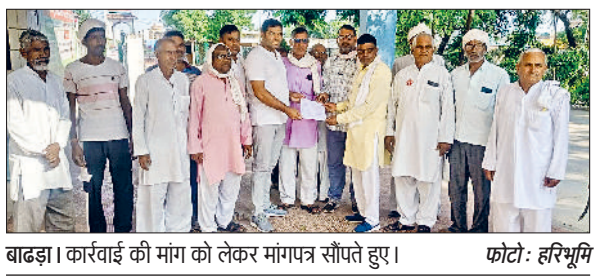

बाढड़ा। कार्रवाई की मांग को लेकर मांगपत्र सौंपते हुए। फोटो: हरिभूमि

मौत पर शोक प्रकट किया

बैठक में सभी पदाधिकारियों ने आईपीएस वाई पूर्ण कुमार की दुखद मौत पर शोक प्रकट करते हुए राज्यपाल से इसमें हस्तक्षेप करने की मांग की। उन्होंने कहा कि आईपीएस वाई पूर्ण कुमार के निधन ने एक बार फिर हमारे संस्थानों के भीतर जाति-आधारित भेदभाव की निरंतर और प्रणालीगत प्रकृति को उजागर कर दिया है। मृतक अधिकारी के अपने अंतिम नोट सहित, रिपोर्टों जातिगत पूर्वाग्रहों में निहित उत्पीडऩ, अपमान और भेदभाव के एक पैटर्न की ओर इशारा करती हैं। सीटू जिला सचिव सुमेर सिंह धारणी व खंड अध्यक्ष भूप सिंह नांधा ने कहा कि आज की बैठक में सभी संगठनों के पदाधिकारियों ने कहा कि पीड़ित परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए सत्य और न्याय की जांच में उनके साथ पूरी एकजुटता प्रकट करते हैं।

स्टेप अप एसआईपी : बच्चे की पूरी पढ़ाई फ्री, फिर भी 50 लाख बचेंगे

भविष्य | बिजनेस डेस्क

अगर आपको भी बच्चे की पढ़ाई और अन्य खर्च से समय रहते मुक्ति पानी है तो आपके लिए स्टेप अप एसआईपी एक अहम निवेश का विकल्प साबित हो सकती है। इसके जरिये निवेश करने से आपको बड़ी राहत मिलेगी। स्कूल की बढ़ती फीस और हायर एजुकेशन की चिंता अक्सर अभिभावकों को सताती हैं। निवेश के जानकारों का कहना है कि समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो इस टेंशन को 'बाय-बाय' कहा जा सकता है। इसके लिए आपको एसआईपी के जरिये निवेश करना होगा और इसे बढ़ाते जाना होगा। यह योजना आपके बच्चे की शिक्षा का खर्च उठा सकती है। साथ ही, बच्चे के 22 साल का होने तक आपके पास 50 लाख रुपये से ज्यादा बच सकते हैं। इसके लिए आपको बच्चे के जन्म से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करनी होगी। इसे 10 साल तक हर साल 10% बढ़ाना होगा। 10 साल बाद कॉन्ट्रिब्यूशन बंद कर देना है। फिर बच्चे की 10 से 22 साल की उम्र तक हर महीने 25,000 रुपये निकालने हैं। यह सब बिना किसी एजुकेशन लोन के संभव है।

यह दिया सुझाव

99% माता-पिता बिना किसी स्कीम के स्कूल फीस पर लाखों रुपये खर्च करते हैं। 'क्या हो अगर 10 साल की एसआईपी आपके बच्चे की शिक्षा को लगभग मुफ्त में फंड कर सके... और फिर भी उनके सपनों के लिए लाखों छोड़ जाए?' उन्होंने एक स्टेप-अप एसआईपी स्ट्रैटेजी का सुझाव दिया है। यह स्ट्रैटेजी महंगे एजुकेशन लोन की जगह ले सकती है। यह लंबी अवधि की वित्तीय योजना है।

कैसे काम करती है स्कीम?

यह योजना इस तरह काम करती है। जब आपका बच्चा पैदा हो तब हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करें। अगले 10 सालों तक हर साल एसआईपी की राशि को 10% बढ़ाएं। 10 साल पूरे होने के बाद एसआईपी में पैसा डालना बंद कर दें। जब बच्चा 10 साल का हो जाए तब से 22 साल का होने तक हर महीने 25,000 रुपये निकालें। यह पैसा बच्चे की फीस के लिए होगा। इस योजना में 12% सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) मानी गई है।

क्या है पूरा गणित?

निवेश के गणित के अनुसार, आप 10 साल में कुल 19.12 लाख रुपये का निवेश करेंगे। तब तक यह राशि बढ़कर 32.69 लाख रुपये हो जाएगी। अगले 12 सालों में आप एजुकेशन के लिए कुल 36 लाख रुपये निकालेंगे। इसके बावजूद आपके खाते में 51 लाख रुपये बचे रहेंगे। उन्होंने कहा, 'पैसे निकालते समय भी कंपाउंडिंग काम करती है।' इसका मतलब है कि बचा हुआ पैसा बढ़ता रहता है। इससे भुगतान के दौरान भी धन बढ़ता रहेगा।

दंग कर देने वाले रिजल्ट

इस योजना की तुलना एजुकेशन लोन से करें। 36 लाख रुपये के एजुकेशन लोन पर 11% ब्याज दर से 10 साल के लिए ईएमआई लगभग 50,000 रुपये प्रति माह होगी। यह एसआईपी से निकाली गई राशि से दोगुना है। इसमें ब्याज का भारी बोझ भी होता है। कौशिक ने कहा कि यह रणनीति आपकी आय वृद्धि से मेल खाती है। उन्होंने बताया, '10 हजार रुपये महीने से शुरू करें और 10वें साल तक आप सालाना 2.8 लाख रुपये का निवेश कर रहे होंगे जो प्रमोशन और वेतन वृद्धि के अनुरूप है।' उनके कुछ सुझाव भी हैं। कम लागत वाले इंडेक्स फंड का उपयोग करें। आपात स्थितियों के लिए हमेशा कुछ लिक्विडिटी बनाए रखें। अपनी प्रगति की सालाना समीक्षा करते रहें। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, '10 साल के लिए एक अनुशासित, स्टेप-अप एसआईपी एक दशक के ओवरटाइम से कहीं ज्यादा कर सकती है।' यह तनाव-मुक्त और स्मार्ट कंपाउंडिंग का तरीका है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- सीए ने निवेशकों को बताया क्रिप्टोकरेंसी से होने वाले नफे-नुकसान का गणित
- क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं तो इस पर लगने वाले टैक्स के बारे में भी जान लें

100 रुपये प्रॉफिट कमाने के बाद 100 रुपये गंवाने पर भी चुकाने होंगे 30 रुपये

क्रिप्टो नहीं, टैक्स का मायाजाल पैसे गंवाए तो भी देना होगा कर

अगर आप बाजार में शॉर्ट टर्म निवेश करना चाहते हैं तो आपके कुछ स्कीम बाजार में मौजूद हैं। इनमें रिटर्न भी बढ़िया मिलता है इसे लिक्विड फंड के नाम से जाना जाता है। ऐसे निवेश में पैसा उन सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों से अधिक नहीं होती है। निवेशकों का पैसा इसके जरिए मनी मार्केट, शॉर्ट टर्म कॉरपोरेट डिपॉजिट और ट्रेजरी में लगाया जाता है।

देश में कई सालों से लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रहे हैं। कई तो इससे मोटा मुनाफा भी कमा चुके हैं और कई अपनी जमापूंजी गंवा चुके हैं। लेकिन अब सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के नियम कड़े कर दिए हैं। क्रिप्टोकरेंसी में होने वाली कमाई पर 30 फीसदी का टैक्स लगता है। खास बात यह है कि आपने क्रिप्टोकरेंसी में 100 रुपये का प्रोफिट कमाया और बाद में उसे इसी एसेट्स में गंवा दिया तो भी आपको 30 रुपये टैक्स देना होगा। पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का चलन काफी तेजी से बढ़ा है। वहीं पिछले साल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। तब से क्रिप्टो में और तेजी देखने को मिली है। इसे देखते हुए अब काफी भारतीय बिटकॉइन, इथेरियम, बाइनेंस, डॉगकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने लगे हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी पर किसी भी सरकार का केंद्रीय बैंक का कंट्रोल नहीं है, ऐसे में इसमें होने वाले प्रॉफिट पर भारत में टैक्स से जुड़े नियम काफी सख्त हैं। दरअसल, क्रिप्टोकरेंसी में टैक्स का नियम कुछ ऐसा है कि इसमें पैसे कमाने पर ही नहीं बल्कि पैसे गंवाने पर भी इनकम टैक्स चुकाना पड़ सकता है। फिर चाहे आपका पूरा पोर्टफोलियो घाटे में ही क्यों ना चल रहा हो। भारत के सख्त क्रिप्टो टैक्स नियमों के तहत, निवेशकों को हर रुपये के मुनाफे पर फ्लैट 30% टैक्स देना होता है, भले ही कुल मिलाकर नुकसान हुआ हो। एक्सपर्ट का कहना है कि यह सिस्टम दुनिया के सबसे कठोर नियमों में से एक है, जिससे भारतीय क्रिप्टो निवेशकों को राहत मिलने की गुंजाइश बहुत कम है। इस टैक्स सिस्टम को लेकर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) ने अपनी राय रखी और क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों को अगाह किया है कि इसमें सोच समझकर ही निवेश करें, वरना यह घाटे का सौदा हो सकता है।

क्रिप्टो टैक्सेशन की बताई सच्चाई

एक सीए ने सोशल मीडिया पर क्रिप्टो टैक्सेशन की सच्चाई बताई है। उन्होंने पोस्ट के जरिए मैसेज दिया है कि भले ही आपने क्रिप्टो में 100 रुपये गंवाए हों, आपको 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने पड़ सकते हैं। उन्होंने समझाया कि मान लीजिए कि आपने एक ही वित्तीय वर्ष में बिटकॉइन पर 100 रुपये का मुनाफा कमाया, लेकिन इथेरियम पर 200 रुपये का नुकसान उठाया। किसी भी दूसरे निवेश में आपको कुल 100 रुपये का नुकसान होता। लेकिन क्रिप्टो में ऐसा नहीं है। बिटकॉइन से हुई 100 रुपये की कमाई पर आपको 30% यानी 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने होंगे। फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इथेरियम या किसी दूसरी क्रिप्टो से आपको कितना नुकसान हुआ है। ऐसे में आपको कुल 130 रुपये की चपत लगेगी।

क्या है क्रिप्टो से जुड़े नियम

- आयकर अधिनियम की धारा 115बीबीएच के तहत क्रिप्टो एसेट्स के लिए कुछ खास और कड़े नियम हैं।
- नुकसान की भरपाई नहीं (आप एक क्रिप्टो नुकसान को दूसरे मुनाफे से नहीं काट सकते)।
- नुकसान आगे नहीं ले जा सकते (इसे समायोजित नहीं कर सकते)।
- अधिग्रहण की लागत को छोड़कर कोई कटौती नहीं।
- ट्रेडिंग फीस जैसे चार्ज भी नहीं घटाए जाते
- इथेरियम पर 200 रुपये के नुकसान को अनदेखा कर दिया जाएगा और बिटकॉइन पर हुए 100 रुपये के मुनाफे पर 30% यानी 30 रुपये टैक्स देना होगा।
- कुल मिलाकर 130 रुपये का नुकसान होगा। यहां तक कि ट्रेडिंग फीस, गैस चार्ज, माइनिंग की लागत, या एक्सचेंज कमीशन जैसी चीजें आपके टैक्सेबल मुनाफे से नहीं घटाई जा सकतीं।

क्या है क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा है जो कंप्यूटर नेटवर्क पर सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तरीके से काम करती है। यह पारंपरिक मुद्राओं की तरह नहीं है, जो सरकारों द्वारा नियंत्रित और जारी की जाती हैं।

विशेषताएं

1. विकेंद्रीकृत : क्रिप्टोकरेंसी किसी एक केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित नहीं होती है।
2. डिजिटल : यह पूरी तरह से डिजिटल रूप में मौजूद होती है।
3. क्रिप्टोग्राफी : सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
4. ब्लॉकचेन : अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होती हैं।
5. सीमित आपूर्ति : कई क्रिप्टोकरेंसी की आपूर्ति सीमित होती है।

प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी

1. बिटकॉइन : पहली और सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी।
2. एथेरियम : स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए जानी जाती है।
3. रिपल : अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए उपयोग।
4. लाइटकॉइन : बिटकॉइन का एक वैकल्पिक।
5. कार्डानो : शोध-आधारित ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म।

उपयोग

1. डिजिटल भुगतानः ऑनलाइन लेनदेन के लिए।
2. निवेशः कई लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं।
3. विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग : एथेरियम जैसे प्लेटफॉर्म पर।
4. सीमापार लेनदेनः पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेज और सस्ता।

जोखिम

1. अस्थिरताः कीमतें बहुत तेजी से बदल सकती हैं।
2. सुरक्षा जोखिमः हैकिंग और चोरी का खतरा।
3. नियामक अनिश्चितताः विभिन्न देशों में नियम अलग-अलग हैं।
4. घोटालेः फ्रॉड और स्कैम का खतरा।
5. तकनीकी जोखिमः तकनीकी समस्याएं आ सकती हैं।

दिवाली बोनस का करें सही इस्तेमाल कर सकते हैं अपने लिए बड़ी बचत

म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट प्लान या कर्ज चुकाने में लगाएं, जरूरतों के लिए 30%, इच्छाओं के लिए- 30%, वेल्थ बनाने के लिए-40% प्रयोग करें

तोहफा | बिजनेस डेस्क

दिवाली को महज कुछ दिन ही शेष बचे हैं। ऐसे में हर साल दिवाली पर ज्यादातर कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं। यह बोनस हमारे लिए खुशियों का तोहफा भी होता है, साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का मौका भी। हालांकि अक्सर होता यह है कि जैसे ही बोनस हाथ में आता है, हम शॉपिंग, नई चीजें खरीदने और शौक पूरे करने में पैसा खर्च कर देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इस पैसे का स्मार्ट उपयोग क्या हो सकता है। इसका आप कहां सही इस्तेमाल कर सकते हैं। कैसे अपनी वेल्थ बना सकते हैं या कर्ज उतार सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से बांटें : सही बैलेंस बनाएं

बोनस को खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि इसे दो हिस्सों में बांट लें-एक हिस्सा त्योहार मनाने के लिए और दूसरा भविष्य की जरूरतों के लिए। बाजार के जानकारों के अनुसार बोनस का 50% हिस्सा त्योहार और लाइफस्टाइल पर खर्च करें और बाकी 50% म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट या कर्ज चुकाने जैसे लॉन्ग-टर्म गोल्स के लिए रखें। अगर आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारियां हैं, तो तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। जैसेः-

■ जरूरतों के लिए- 30%■ इच्छाओं के लिए- 30%■ वेल्थ बनाने के लिए- 40%

जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें।

इसे बांटने का हर किसी का तरीका अलग हो सकता है। 'अपने बोनस को अपनी जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें। अगर आपके ऊपर हाई-इंटरेस्ट कर्ज है, तो 60-70% बोनस उसको चुकाने में लगाएं।'

"'बोनस को बांटने की प्रक्रिया में परिवार को जरूर शामिल करें, ताकि हर कोई मस्ती और अनुशासन के बीच बैलेंस समझे।' इस तरह समझदारी से खर्च और स्मार्ट निवेश के साथ आपका दिवाली बोनस न सिर्फ त्योहार को खास बनाएगा, बल्कि आपके भविष्य को भी बेहतर बनाने के काम आ सकता है।

हाई-इंटरेस्ट कर्ज चुकाएं

अपने बोनस का कुछ हिस्सा क्रेडिट कार्ड के बिल, पर्सनल लोन या किसी भी हाई-इंटरेस्ट कर्ज को चुकाने में लगाएं। इससे भविष्य में आपका पैसा बचेगा। 'सबसे पहले अपने कर्ज की लिस्ट बनाएं, सबसे ज्यादा इंटरेस्ट वाले कर्ज को पहले चुकाएं। यहां तक कि आंशिक पेमेंट भी लोन की अवधि और टोटल इंटरेस्ट को कम कर सकता है।' अगर आपके पास महंगा कर्ज है, तो नए निवेश से पहले इसे चुकाना प्रायोरिटी होनी चाहिए।

निवेश की स्ट्रैटजी

निवेश के लिए ऑप्शन्स आपकी जरूरतों पर निर्भर करते हैं। '3 साल से कम की अवधि के लिए लिक्विड फंड्स या रिकरिंग डिपॉजिट्स में निवेश करें। मीडियम से लॉन्ग-टर्म के लिए डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स या इंडेक्स फंड्स चुनें।' अपने पोर्टफोलियो में डायवर्सिफिकेशन के लिए सोवरेन गोल्ड बॉन्ड्स या गोल्ड ईटीएफ भी जोड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि रिटर्न और लिक्विडिटी में बैलेंस बनाएं, ताकि आपका शॉर्ट-टर्म पैसा रिस्क में न आए। दिवाली बोनस आपके फाइनेंशियल गोल्स को तेजी से पूरा करने का मौका है। 'बोनस या तो एक हफ्ते की शॉपिंग में खत्म हो सकता है या सालों तक आपके लिए काम कर सकता है। इसे फाइनेंशियल फिटनेस का बूस्टर समझें।'

सेलिब्रेशन के लिए बजट बनाएं

त्योहार की खुशी फाइनेंशियल टेंशन में न बदल जाए इसके लिए सही बजट बनाना जरूरी है। 'पहले अंदाजा लगाएं कि त्योहार में कितना खर्च होगा-गिफ्ट्स, घूमने-फिरने, सजावट, ट्रैवल और धार्मिक रस्मों पर।' इस खर्च को अपने बोनस और रेगुलर इनकम के साथ मिलाकर देखें। इससे आपको एक फिक्स्ड बजट मिलेगा और आप बाकी पैसों को पहले ही निवेश में डालकर अपने गोल्स को प्रायोरिटी दे सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से सेलिब्रेट करें

त्योहारों में ओवरस्पेंडिंग का खतरा हमेशा रहता है। 'बोनस को 'एक्स्ट्रा' पैसा समझकर फूंक न दें।' क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन लेकर शॉपिंग करना तो बिल्कुल अवॉइड करें, क्योंकि इनके इंटरेस्ट रेट्स बहुत ज्यादा होते हैं और ये कर्ज के जाल में फंसा सकते हैं। बिना कर्ज के सेलिब्रेशन के लिए क्रिएटिव तरीके अपनाएं। 'पॉटलक गैदरिंग्स करें, दीया डेकोरेशन बनाएं या अर्ली-बर्ड ट्रैवल डील्स का फायदा उठाएं।'

'फंड ऑफ फंड्स' में करें निवेश, दोनों हाथों में रहेंगे लड्डू

बिजनेस डेस्क

सोना और चांदी की कीमत इस समय रॉकेट की रफ्तार से भाग रही है। वहीं, फेस्टिव सीजन के कारण इसकी कीमत में और तेजी आ सकती है। अगर आप धनतेरस पर सोना और चांदी दोनों में निवेश करना चाहते हैं तो 'कॉम्बो फंड ऑफ फंड्स' एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकते हैं। दरअसल, इस समय म्यूचुअल फंड कंपनियां निवेशकों को दोनों धातुओं में आसानी से निवेश करने का मौका दे रही हैं। इसके लिए वे डुअल-एसेट पैसिव फंड्स (ऐसे फंड जो सोने और चांदी दोनों में निवेश करते हैं) लॉन्च कर रही हैं। पिछले दो साल में सोने की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। वहीं, औद्योगिक मांग और सप्लाई में कमी के कारण चांदी भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में निवेशक महंगाई से बचने और अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए गोल्ड और सिल्वर फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) की ओर रुख कर रहे हैं।

अलग-अलग निवेश की जरूरत नहीं

डुअल-एसेट पैसिव फंड्स में निवेश के बाद सोना और चांदी, दोनों में अलग-अलग निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। यानी आप फिजिकल सोना-चांदी खरीदे या अलग-अलग ईटीएफ में निवेश किए बिना दोनों की तेजी का फायदा उठा सकते हैं। इस नई कैटेगरी में चार बड़े फंड्स सामने आए हैं। इनमें कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ और मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ शामिल हैं।

1. कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

- यह फंड 20 अक्टूबर 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। निवेशक सिर्फ 100 से निवेश शुरू कर सकते हैं।
- इसका मकसद कोटक गोल्ड ईटीएफ और कोटक सिल्वर ईटीएफ में निवेश करके लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न कमाना है।
- यह एफओएफ एक खास क्वांटिटेटिव मॉडल का इस्तेमाल करता है। यह मॉडल सोने और चांदी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के आधार पर अपने आप तय करता है कि किस धातु में कितना पैसा लगाना है।

2. मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

इस फंड में शुरुआत में 50:50 का आवंटन होता है, लेकिन सोने-चांदी के अनुपात (गोल्ड-सिल्वर रेश्यो) व महंगाई, ग्लोबल ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती जैसे बड़े आर्थिक संकेतकों के आधार पर यह अनुपात बदलता रहता है। इस फंड का एक्सपेंस रेशियो 0.18% है और 7 अक्टूबर 2025 तक इसका एयूएम (एसेट्स अंडर मैनेजमेंट- फंड में कुल जमा राशि) 67 करोड़ रुपये था।

3. एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड सितंबर 2022 में लॉन्च हुआ था। यह भारत का सबसे पुराना डुअल-मेटल फंड है और हाल के दिनों में धातुओं की तेजी से इसने काफी फायदा उठाया है। इसमें 500 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं। यह फंड सोने और चांदी में लगभग बराबर हिस्सेदारी रखता है यानी 49.98% सोने में और 49.83% चांदी में। फंड ने पिछले एक साल में 57.9% का रिटर्न दिया है और पिछले तीन सालों में सालाना 31.97% का रिटर्न दिया है।

4. मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड अक्टूबर 2022 में लॉन्च हुआ था और इसने पिछले दो सालों में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। यह फंड 69.34% आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ में और 30.17% निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ में निवेश करता है। इसका एयूएम 244.32 करोड़ रुपये है, एक्सपेंस रेशियो 0.15% है और कोई एग्जिट लोड नहीं है। फंड ने पिछले एक साल में 59.7% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले दो सालों में सालाना 18.1% का सीएजीआर व पिछले तीन सालों में सालाना 11.6% का रिटर्न दिया है।

एफडी साइलेंट वेल्थ ट्रैप, सिर्फ इससे ही नहीं बन पाओगे अमीर दूसरे विकल्पों पर भी दें ध्यान

सुझाव | बिजनेस डेस्क

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में निवेश को ही असली निवेश समझते हैं तो आप गलत हो सकते हैं। एक एक्सपर्ट ने एफडी में निवेश को 'साइलेंट वेल्थ ट्रैप' बताया है। यानी एक ऐसा जाल जिसमें आप अमीर बनने के लिए जाते हैं, लेकिन अंत में फंस जाते हैं। क्योंकि सिर्फ एफडी में निवेश करके अमीर नहीं बना जा सकता। एक्सपर्ट ने इसका कारण भी बताया है। जानकारों का कहना है कि बड़ा फंड बनाने के लिए सिर्फ एफडी में निवेश करना सही नहीं है। उन्होंने उन लोगों को भी चेतावनी दी है जो एफडी में निवेश को ही असली निवेश समझ लेते हैं। वह बताते हैं कि यह जाल तब बनता है जब लोग अपना ज्यादातर पैसा एफडी में रखते हैं। वे महंगाई के असर और पैसे बढ़ाने के मौकों को नजरअंदाज कर देते हैं। एफडी में आपका पैसा तो सुरक्षित रहता है, लेकिन आपको रिटर्न बेहद कम मिलता है। इसलिए सिर्फ एफडी के भरोसे नहीं रहें। निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशे।

निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें, तभी बढ़ा पाएंगे पैसा

यह मिलता है ब्याज

आज एफडी की सालाना दरें लगभग 6.3% से 7% हैं, जबकि महंगाई करीब 2.1% है। आपकी असली कमाई लगभग 4.2 से 4.9% प्रति वर्ष है।' अगर आप 10 लाख रुपये एफडी में रखते हैं, तो एक साल बाद उसकी असली खरीदने की ताकत सिर्फ 10.42 लाख रुपये ही रह जाती है। इसका मतलब है कि आपका पैसा असल में बहुत कम बढ़ता है।

लोगों को एफडी पर भरोसा क्यों

भारत के लगभग 70% परिवार अभी भी एफडी को ही अपनी बचत का मुख्य जरिया मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों को इसमें पैसे की पूरी सुरक्षा का भरोसा मिलता है। साथ ही, उन्हें पैसे के लेन-देन की कम जानकारी होती है और वे बाजार के उतार-चढ़ाव से डरते हैं।

यह दी चेतावनी

उन्होंने चेतावनी दी कि सुरक्षा का यह भरोसा तभी तक सही है जब तक महंगाई कम रहती है। उन्होंने लिखा कि अगर महंगाई आपकी एफडी से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा हो जाती है तो आपकी असली दौलत कम होने लगती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वित्तीय सुरक्षा लापरवाही से नहीं, बल्कि निवेश को अलग-अलग जगह बांटने से मिलती है।

निवेश का तरीका बताया

एक संतुलित निवेश का तरीका सुझाया। इसमें फिक्स्ड डिपॉजिट के साथ शेयर बाजार (जिसने पहले 12 से 15% सीएजीआर का रिटर्न दिया है), डेट फंड (6.5 से 8%) और महंगाई से बचाने वाले निवेश जैसे सोना या आरईआईटीएस को शामिल करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि अपने निवेश को एक ही जगह न रखकर अलग-अलग जगह बांटें।

ये हैं निवेश के विकल्प

1. **शेयर बाजार (इक्विटी)- शेयर :** कंपनियों के हिस्सेदारी वाले शेयर।
   - **म्यूचुअल फंड :** पेशेवर प्रबंधन वाले फंड जो विविध शेयरों में निवेश करते हैं।
   - **ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड):** शेयर बाजार में ट्रेड होने वाले फंड।
2. **फिक्स्ड इनकम निवेश- फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी):** बैंकों में निश्चित अवधि के लिए जमा।
   - **बॉन्ड:** कंपनियों या सरकार द्वारा जारी कर्ज साधन।
   - **डेब्ट म्यूचुअल फंड:** बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।

ये हैं निवेश के विकल्प

3. **रियल एस्टेट- आवासीय संपत्ति :** घर या फ्लैट।
   - **वाणिज्यिक संपत्ति :** ऑफिस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स।
   - **आरईआईटी (रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट):** रियल एस्टेट में निवेश के लिए ट्रेडेबल यूनिट्स।
4. **सोना और कीमती धातुएं-भौतिक सोना :** सिक्के, बार।
   - **गोल्ड ईटीएफ :** सोने में निवेश के लिए एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
   - **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड:** सरकार द्वारा जारी।
5. **म्यूचुअल फंड- इक्विटी फंड:** शेयर बाजार में निवेश।
   - **हाइब्रिड फंड:** इक्विटी और डेट का मिश्रण।
   - **डेब्ट फंड:** फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।
6. पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड)- लंबी अवधि की बचत योजना जो कर लाभ देती है।
7. एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)- रिटायरमेंट के लिए पेंशन योजना।
8. यूएलआईपी (यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान)- निवेश और बीमा का मिश्रण।
9. क्रिप्टोकरेंसी- डिजिटल मुद्राएं जैसे बिटकॉइन, एथेरियम (उच्च जोखिम)।
10. एफडी और आरडी (रिकरिंग डिपॉजिट)- बैंकों में निश्चित आय के विकल्प।

खबर संक्षेप

खेड़की के श्मशान घाट में युवक ने लगाया फंदा

महेंद्रगढ़। गांव खेड़की में एक युवक ने गांव के श्मशान घाट में जाल के एक पेड़ पर फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। जानकारी मुताबिक करीब 32 वर्षीय शमशेर ने पेड़ पर लटककर फांसी लगा ली, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस को दिए बयान में बाबूलाल यादव वासी गांव मुंडायन ने बताया कि उसके 32 वर्षीय भांजे खेड़की निवासी शमशेर ने श्मशान घाट में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है।

युवक ने फंदा लगाकर की जीवनलीला समाप्त

मंडी अटेली। गांव बिहाली में 31 वर्षीय रोहित ने फंदा लगाकर जीवनलीला समाप्त कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार रोहित दुबई में एक कंपनी में कार्य कर रहा था। अभी फिलहाल वह घर आया हुआ था। रोहित की मौत की सूचना मिलते ही ग्रामीण बड़ी संख्या में ग्रामीण जमा हो गए। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। अटेली पुलिस ने मृतक युवक का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। आत्महत्या करने का कारण पता नहीं चल पाया है।

दौगड़ा अहीर गांव में रक्तदान शिविर आज

मंडी अटेली। गांव दौगड़ा अहीर में 12 अक्टूबर को छठे स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए शक्ति सिंह ने बताया कि यह शिविर सीताराम मंदिर में सुबह 10 से दोपहर एक बजे तक लगाया जाएगा।

गाड़ी में तोड़फोड़ करने के मामले आरोपित काबू

नारनौल। आपसी कहासुनी को लेकर गाड़ी में तोड़फोड़ करने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना अटेली पुलिस ने एक और आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान अंकित वासी सुरानी के रूप में हुई है। पुलिस पांच आरोपितों को पहले गिरफ्तार कर चुकी है। शिकायतकर्ता प्रवीन ने बताया कि वह आईटीआई की पढ़ाई करता है। उसने बताया कि दो अगस्त को अपने उसके दोस्त के साथ गाड़ी लेकर अटेली में म्यूजिक सिस्टम ठीक कराने के लिए गया था। जब रेवाड़ी अटेली रोड पर पहुंचे तो पीछे से एक कैम्पर गाड़ी, जिस पर नम्बर प्लेट नहीं थी। जिसके चालक ने अचानक उसकी गाड़ी के आगे लगाकर रास्ता बंद किया।

कृषि विभाग गांवों में पराली प्रबंधन को लेकर चला रहा है जागरूकता अभियान

पराली का प्रबंधन करने से बढ़ती है मिट्टी की उर्वरा शक्ति

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग उपायुक्त के आदेशानुसार धान बिजाई वाले गांवों में पराली प्रबंधन के लिए कर रहा जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा उपायुक्त के आदेशानुसार धान बिजाई वाले गांवों में पराली न जलाने संबंधी जागरूकता अभियान तेज गति से चलाया जा रहा है।

इसी कड़ी में बवानीखेड़ा के वीर शहीद कपिल देव जी राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को पराली जलाने से होने वाले नुकसान और पराली प्रबंधन के लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में कृषि विभाग के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को बताया कि पराली जलाने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति घट जाती है और पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंचता है। वहीं यदि खेत में ही पराली का प्रबंधन किया जाए तो मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर होती है और अगली फसल की पैदावार बढ़ती है। उप कृषि निदेशक डॉ. विनोद फौगाट ने बताया कि भिवानी जिले के 116 गांवों में करीब 71173 एकड़ में धान की खेती की गई है, जिससे लगभग एक लाख मीट्रिक टन पराली उत्पन्न होने की संभावना है।

बवानीखेड़ा। विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए। फोटो : हरिभूमि

निगरानी के लिए 229 नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए

उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा पराली जलाने पर सख्ती बरती जा रही है और निगरानी के लिए 229 नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। साथ ही, विभिन्न विभागों की इंफोर्समेंट टीमों का गठन किया गया है और धारा 163 लागू की गई है। खेतों पर सैटेलाइट मॉनिटरिंग सिस्टम से सख्त निगरानी रखी जा रही है। सहायक कृषि अभियंता नसीब सिंह धनखड़ ने विद्यार्थियों को बताया कि पराली प्रबंधन अपनाने वाले किसानों को प्रति एकड़ 1200 रुपये प्रोत्साहन राशि दी जाती है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे अपने अभिभावकों को पराली न जलाने और आधुनिक कृषि यंत्रों से खेत में पराली प्रबंधन के लिए प्रेरित करें।

मोबाइल एप की जानकारी दी

उपमंडल कृषि अधिकारी संजय मक्कड़ ने किसानों के लिए बनाए गए मोबाइल एप की जानकारी साझा की, जिससे पराली प्रबंधन से जुड़ी योजनाओं और तकनीकी सहायता का लाभ लिया जा सकता है।उप कृषि निदेशक डॉ. विनोद फौगाट ने बताया कि भिवानी जिले के 116 गांवों में करीब 71173 एकड़ में धान की खेती की गई है, जिससे लगभग एक लाख मीट्रिक टन पराली उत्पन्न होने की संभावना है। इस मौके पर कृषि विभाग के इंजीनियर तरुण कुमार, डॉ. बिशन सिंह तथा शिक्षा विभाग से अध्यापक सत्यवान, राजेंद्र, हरदीप, विजयपाल और कृष्ण कुमार सहित अन्य शिक्षक व विद्यार्थी मौजूद रहे।

सैनी कल्याण परिषद ने प्रतिभा प्रोत्साहन परीक्षा का परिणाम किया जारी

शिक्षित बनने व लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है प्रतियोगी परीक्षाएं

- परिणाम घोषणा के दौरान मेधावियों को सम्मानित किया तथा उन्हें आगे की तैयारी के लिए प्रोत्साहित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

युवाओं की छिपी हुई प्रतिभा को निखारने और उन्हें भविष्य की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने के उद्देश्य से सैनी कल्याण परिषद द्वारा बीते दिनों आयोजित करवाई गई प्रतिभा प्रोत्साहन एवं विकास परीक्षा का परिणाम शनिवार को स्थानीय जहरगिरी आश्रम में जारी किया गया।

सैनी कल्याण परिषद द्वारा शिक्षाविद् राजकुमार सैनी के मार्गदर्शन में आयोजित इस परीक्षा ने जिले के करीबन 1500 विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच प्रदान किया।

यह महत्वपूर्ण परीक्षा भिवानी जिला के विभिन्न गांवों में बनाए गए 8 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की गई थी, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने उत्साह और आत्मविश्वास के साथ भाग लिया।

भिवानी। परीक्षा परिणाम घोषित होने के बाद उपस्थित प्रतिभागी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

परीक्षा परिणाम समारोह का आयोजन

परीक्षा का सफल आयोजन परिषद की शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। परीक्षा परिणाम समारोह का आयोजन महंत कैलाश गिरी के सान्निध्य में जहरगिरी आश्रम में हुआ। शिक्षाविद् राजकुमार सैनी ने इस अवसर पर मेधावी बच्चों को सम्मानित किया और उन्हें शिक्षा के महत्व के बारे में प्रेरित किया। कार्यक्रम में मंच का संचालन संदीप सैनी एडवोकेट व सुरेश चंद्र सैनी ने किया। इस मौके पर बच्चों को संबोधित करते हुए शिक्षाविद् राजकुमार सैनी ने कहा कि शिक्षा वो शेरनी का दूध है, जो पियेगा, वो दहाड़ेगा। उन्होंने विद्यार्थियों को बाबा साहेब डा. भीमराव अंबेडकर व महात्मा ज्योतिबा फूले के दिखाए मार्ग पर चलने और अधिक से अधिक शिक्षित बनने का आह्वान किया। सैनी ने कहा कि इस प्रकार की परीक्षाएं बच्चों को शिक्षित बनने और अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। यह पहल न केवल विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाएगी, बल्कि उन्हें भविष्य की सरकारी नौकरियों और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी मानसिक रूप से तैयार करेगी।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर प्रधान भूप सिंह सैनी, उपप्रधान आजाद सैनी, रामगोपाल सैनी, सीएम विंडो एमीनेंट पर्सन बवानीखेड़ा सुभाष चंद्र सैनी, वाईचेयरमैन लोहारू राजकुमार सैनी, सुरेंद्र सैनी, फूल सिंह सैनी, रतिराम सैनी, मा. सुरेंद्र सैनी, मा. राधेश्याम सैनी ठेकेदार, मुनीष सैनी, सुरजीत सैनी, चिरंजीलाल सैनी, योगेश सैनी, जगदीश चंद्र सैनी, नवीन सैनी एडवोकेट, जगदीश चंद्र सैनी सिकंदरपुर, महाबीर सैनी, सुनील सैनी, नवीन सैनी फैंसी ट्रॉफी वाले, डा. बंसीलाल सैनी बीण, मुकेश सैनी, दयानंद सैनी प्रधान दुल्हेड़ी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

ये रहा परिणाम

प्रतियोगिता में 5वीं कक्षा वर्ग में गौरव सैनी प्रथम व हिमानी द्वितीय, छठी कक्षा गर्व में मीनाक्षी प्रथम, विनय द्वितीय आयान सैनी तृतीय रहे। 7वीं कक्षा वर्ग में मनन सैनी प्रथम, हर्ष द्वितीय भाविका तृतीय, 8वीं कक्षा वर्ग में मनन सैनी व — प्रथम, आयुषी द्वितीय व हरी प्रिया तृतीय, 9वीं कक्षा वर्ग में कशिश प्रथम, याशी सैनी व दिव्यांशी द्वितीय व मौसम तृतीय, 11वीं कक्षा वर्ग में प्रिया सिंह प्रथम, विकास व राधिका सैनी द्वितीय तथा सार्थक तृतीय, 12वीं कक्षा वर्ग में चंचल सैनी प्रथम, पारूल द्वितीय व नितिन सैनी तृतीय रहे।

चरखी दादरी। राजेश सांगवान को कांग्रेस का फटका पहनाते रणदीप सुरजेवाला। फोटो : हरिभूमि

कांग्रेस में शामिल हुए जजपा के पूर्व हलका अध्यक्ष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव व सांसद रणदीप सुरजेवाला का दादरी दौरे के दौरान पूर्व सरपंच एवं जेजेपी के पूर्व हलका अध्यक्ष राजेश सांगवान सैकड़ों समर्थकों के साथ कांग्रेस में शामिल हो गए। रणदीप सुरजेवाला और जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुशील धानक ने सभी का तिरंगा पटका पहनाकर स्वागत किया और सभी को पार्टी में पूरा सम्मान देने का ऐलान किया।

भाजपा जन विरोधी

रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि किसान और मजदूर विरोधी भाजपा सरकार को चलता करने के लिए हम सबको एकजुट होना पड़ेगा और लंबी लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि राजेश सांगवान और इनके साथियों के कांग्रेस पार्टी में शामिल होने से हमें और मजबूती मिली है। उन्होंने कहा कि बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है लेकिन मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी केवल जुमले बाजी में व्यस्त हैं।

एंबुलेंस में तोड़फोड़ करने के मामले में चार गिरफ्तार

:नारनौल। पैसों के लेन देन के मामले में आपसी रंजिश के चलते एम्बुलेंस तोड़ने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर पुलिस ने चार आरोपितों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान दीपक वासी भोड़ी अटेली, दीपक वासी खारीवाड़ा अटेली, मनीष वासी सागरपुर अटेली व रितीश वासी मांढण कोटपूतली बहरोड़ के रूप में हुई। पुलिस ने पूछताछ में आरोपितों से वारदात में प्रयोग की गई बुलेरो गाड़ी बरामद की है और एम्बुलेंस तोड़ने में प्रयोग किया गया फरसा बरामद किया है। शिकायतकर्ता मुंशीराम वासी मोहल्ला कैलाश नगर ने शिकायत दी थी कि रेनबो हॉस्पिटल के सामने उसने चाय की दुकान कर रखी है, उसके पास तीन एंबुलेंस गाड़ियां हैं, जिनकी देखरेख उसका लड़का करता है। पीड़ित ने बताया कि 28 सितम्बर को एक एम्बुलेंस चाय की दुकान के सामने खड़ी थी व दूसरी एम्बुलेंस रेनबो हॉस्पिटल के पास पेट्रोल पंप के पास खड़ी थी।

एडीजीपी आत्महत्या मामला न्याय, समानता और गरिमा है प्रश्नचिह्न : अनिरुद्ध

आईपीएस आत्महत्या की निष्पक्ष जांच की मांग उठाई

कांग्रेस ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी ने एडीजीपी आत्महत्या पर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

हरियाणा के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी एडीजीपी वाई. पूरन कुमार की आत्महत्या ने पूरे राज्य ही नहीं, बल्कि देशभर में गहरा शोक और आक्रोश फैला दिया है। यह केवल एक अधिकारी की व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि हमारे प्रशासनिक तंत्र में व्याप्त जातिगत भेदभाव, मानसिक उत्पीड़न और असंवेदनशीलता का भयावह दर्पण है। गौरतलब होगा कि एडीजीपी द्वारा छोड़े गए आत्महत्या पत्र में उन्होंने अपने साथ हुए जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। उनकी पत्नी आईएएस अधिकारी अमनीत पी. कुमार, ने भी अपने बयान में स्पष्ट किया है कि उनके पति को लंबे समय से अपमानित और प्रताड़ित किया जा रहा था। इस पूरे प्रकरण पर कांग्रेस ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि यह केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि तंत्र के भीतर बैठे अन्याय और भेदभाव की जड़ें उजागर करने वाली घटना है। जब एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी तक को सम्मान और न्याय नहीं मिल पाता, तो आम नागरिकों के साथ क्या होता होगा, इसकी कल्पना मात्र से ही मन व्यथित हो उठता है।

लोकतंत्र पर गहरा प्रहार

अनिरुद्ध चौधरी ने कहा कि यह घटना हमारे लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों पर गहरा प्रहार है। अनिरुद्ध चौधरी ने मांग की कि इस प्रकरण की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच हो, एफआईआर में नामजद अधिकारियों को जांच पूर्ण होने तक तत्काल निलंबित किया जाए तथा राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग द्वारा मांगी गई रिपोर्ट 7 दिनों के भीतर सार्वजनिक की जाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस स्व. वाई. पूरन कुमार के परिवार के साथ खड़े है तथा इसे हम अंत तक लड़ा जाएगा।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह 13 को दादरी में

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुशील धानक ने बताया कि देश के मतदाताओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले राहुल गांधी के वोट चोर गद्दी छोड़ अभियान को मजबूती देने के लिए हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह और प्रदेश के सह प्रभारी व एआईसीसी सचिव जितेंद्र बघेल 13 अक्तूबर को सुबह 10 बजे दादरी पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता दादरी की रासीवासिया धर्मशाला एकत्रित होंगे और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह की अगुवाई में लघु सचिवालय तक प्रदर्शन करेंगे।

आनंद स्कूल में पीटीएम का किया आयोजन

शिक्षकों और अभिभावकों ने बच्चों की आगामी शिक्षा पर की चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

मिलकपुर के आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद अभिभावक-शिक्षक मीटिंग का सफल आयोजन किया गया। बैठक में अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन और व्यवहार संबंधी जानकारी शिक्षकों से प्राप्त की। इस अवसर पर विद्यालय में लागू की जा रही प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा एवं प्रायोगिक शिक्षण पद्धति के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही, दो बार बोर्ड परीक्षा प्रणाली, अपार आईडी और पीयर आधारित लर्निंग जैसी नई शैक्षणिक पहल की जानकारी भी अभिभावकों को दी गई।

बवानीखेड़ा। आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर में अभिभावक-शिक्षक मीटिंग के आयोजन में उपस्थितजन। फोटो : हरिभूमि

प्राचार्य ने अभिभावकों से व्यक्तिगत रूप से संवाद किया

विद्यालय के निदेशक साहिल यादव और प्राचार्य नीतीश मिश्र ने सभी अभिभावकों से व्यक्तिगत रूप से संवाद कर विद्यार्थियों की प्रगति पर चर्चा की तथा शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने हेतु उनके सुझाव आमंत्रित किए। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों और शिक्षकों के बीच समन्वय व नई शिक्षा नीति पर नवाचार को सशक्त बनाना एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहभागिता सुनिश्चित करना रहा। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

भारतीय संस्कृति और परंपरा का अटूट हिस्सा है करवाचौथ का पर्व : प्रेमलता

करवा चौथ महिलाओं की श्रद्धा, त्याग और प्रेम की भावना को दर्शाता

करवा चौथ का पर्व है रिश्तों की मजबूती और समाज की एकता का परिचायक : सीमा बंसल

श्रीअग्रवाल महिला मंडल ट्रस्ट रजि. ने धूमधाम से मनाया करवाचौथ का पर्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

श्रीअग्रवाल महिला मंडल ट्रस्ट रजि. द्वारा रोहतक गेट स्थित एक बैंक्वेट हॉल में करवाचौथ का पावन पर्व बड़े ही धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ की धर्मपत्नी प्रेमलता सर्राफ ने मुख्यअतिथि के रूप में शिरकत की और सभी सुहागिनों को पर्व की बधाई दी।

भिवानी। आयोजित पर्व पर उपस्थित महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

यह पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा का अटूट हिस्सा

इस मौके पर मुख्यअतिथि प्रेमलता सर्राफ ने कहा कि करवाचौथ का पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा का अटूट हिस्सा है। उन्होंने कहा कि करवाचौथ पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है। यह पर्व महिलाओं की श्रद्धा, त्याग और प्रेम की भावना को दर्शाता है। आज के आधुनिक दौर में भी हमारी माताओं और बहनों ने जिस आस्था और निष्ठा के साथ इस परंपरा को सहेज कर रखा है, वह सराहनीय है। इस मौके पर श्रीअग्रवाल महिला मंडल ट्रस्ट की चेयरपर्सन सीमा बंसल व प्रधान कांता बंसल ने कहा कि संस्था हर वर्ष इस पर्व को बड़े उत्साह के साथ मनाती है। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य केवल पर्व मनाना नहीं, बल्कि महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जहां वे अपनी परंपराओं का निर्वाह करते हुए एक-दूसरे से मिल सकें और खुशियां बांट सकें। उन्होंने कहाकि करवाचौथ का व्रत हमारे रिश्तों की मजबूती और हमारे समाज की एकता का परिचायक है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में पारिवारिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है और हमारी युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर स्नेह बंसल, किरण बंसल, उर्मिल बंसल, प्रीति, सुमन बंसल, कांता बंसल, संजू बंसल, मनीषा गोयल, श्वेता गर्ग, रेखा अग्रवाल, ममता गुप्ता, सीमा जैन, मंजू गोयल, मंजू मित्तल, रिंकी गुप्ता सहित अन्य महिलाएं मौजूद रहीं।

हाइवे पर गड्ढे बनें वाहन चालकों के लिए परेशानी का सबब

- वाहन चालकों के लिए सफर करना हो रहा जान लेवा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहल

असंध सुधिवास स्टेट हाइवे मार्ग पर बहल पिलानी बाईपास मार्ग पर बने गड्ढे राहगीरों के लिए परेशानी का सबब बने हुए है। अनेक बार वाहन चालक इन गड्ढों की वजह से दुर्घटना का शिकार होते होते बचे है। लोगों ने प्रशासन से सड़क मार्ग को तुरंत प्रभाव से सही करवाने की मांग की है।

स्टेट हाइवे में बहल से राजगढ़ जो जाने वाले मार्ग पर पिलानी बाईपास के समीप काफी दूर में सड़क टूटी हुई है। सड़क टूटने से इसमें हर समय पानी भरा रहता है और पानी भरा होने की वजह से वाहन चालकों को सड़क में बने गड्ढे का अनुमान नहीं होता है। ऐसे में तेज गति से चलते वाहन इन गड्ढों में गिर रहे है। कई बार ऐसा हुआ है जब आमने सामने से आने वाले वाहन भी इन गहरे गड्ढों के कारण दुर्घटनाग्रस्त होते होते बचे है।

बहल। असंध सुधिवास स्टेट हाइवे में बहल कस्बे में सड़क में बने गड्ढे।

बदलाव की पाठशाला: घुसकानी के राजकीय उच्च स्कूल को नया स्वरूप देने की पहल

भिवानी। शिक्षा को संस्कार और सेवा से जोड़ने के लक्ष्य के साथ जिला के गांव घुसकानी स्थित वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय के कायाकल्प का कार्य बदलाव की पाठशाला पहल के तहत पूरे उत्साह और सामूहिक सहयोग से किया जा रहा है। यह पहल केवल विद्यालय की सुंदरता बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों और समाज में जिम्मेदारी, सहयोग और सकारात्मक सोच जगाने की दिशा में एक प्रेरणादायक प्रयास है।

विद्यालय को नया स्वरूप देने के इस महत्वाकांक्षी अभियान में शिक्षक गण, पूर्व छात्र, वर्तमान स्टाफ, ग्रामीण, और ग्राम पंचायत का सराहनीय और सक्रिय योगदान रहा। यह सामूहिक प्रयास इस बात का प्रमाण है कि जब समुदाय एकजुट होता है, तो सकारात्मक बदलाव लाना संभव है।

भिवानी। घुसकानी के स्कूल में शिक्षक, बच्चे ही नहीं, शिक्षिका भी सफाई अभियान को आगे बढ़ा रही।

भिवानी। सफाई के बाद स्वच्छ व साफ सूथरा स्कूल का दृश्य।

सामूहिक प्रयासों से बदली स्कूल की तस्वीर, दूसरे स्कूलों के लिए बना प्रेरणा का स्त्रोत

इस सामूहिक प्रयास से विद्यालय का नया स्वरूप गांव एवं आसपास के क्षेत्र के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहा है। यह पहल दिखाती है कि किस तरह स्थानीय संसाधनों और सामुदायिक भावना का उपयोग करके सरकारी विद्यालयों को बेहतर बनाया जा सकता है। ग्रामीणों एवं ग्राम पंचायत के सहयोग से भविष्य में भी इस तरह की शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियां निरंतर जारी रखने की योजना है, ताकि वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल उच्च राजकीय विद्यालय शिक्षा, संस्कार और सेवा का एक सच्चा केंद्र बना रहे।

पूर्व छात्र बदल रहे है स्कूल की सूरत

उक्त स्कूल की क्लासें पास करके दूसरे स्कूलों में जाने वाले विद्यार्थियों का आज भी स्कूल से लगाव है। वे छुट्टी वाले दिन स्कूल में पहुंच जाते है और स्कूल में शारीरिक शिक्षक विनोद पिंकू की अगुवाई में साफ व सफाई करते है। यहां तक कि पौधों में पानी देना अन्य कोई करना शामिल है। अभी दिवाली पर्व से पहले ही पूर्व विद्यार्थियों ने शारीरिक शिक्षक विनोद पींकू की अगुवाई में स्कूल परिसर में बनाए गए रास्तों पर पेंट आदि करके नया लुक दिया जा रहा है। ताकि बाहर से आने वाले हर व्यक्ति को बड़ा सुंदर लगे।

विनोद पींकू बने बदलाव की पाठशाला के संयोजक

शारीरिक शिक्षक विनोद पिंकू, जो बदलाव की पाठशाला के संयोजक भी है, ने इस पहल के पीछे की भावना को स्पष्ट करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य है कि हर विद्यालय शिक्षा के साथ संस्कार और सेवा का केंद्र बने। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह पहल केवल विद्यालय को सजाने-संवारने की नहीं, बल्कि बच्चों और समाज में जिम्मेदारी, सहयोग और सकारात्मक सोच जगाने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। हाल ही में आयोजित किए गए अभियान में जेबीटी. अध्यापक संदीप दुग्गल, रामोतार तिगड़ाना, तथा पूर्व छात्र और राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी अनुग्रह, सन्नी, अनिकेत, मोहित, पुनीत, दीपांशु, नैतिक, संजीत, अतुल, सौरभ, अमित, सुमित आदि ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

इस दौरान सभी प्रतिभागियों ने मिलकर कई महत्वपूर्ण कार्य किए,

जिनमें विद्यालय परिसर की सफाई, पेड़ों की खुदाई और पौधारोपण, इमारतों का रंग-रोगन, बेंच पेंटिंग, दीवारों पर प्रेरक संदेशों की सजावट आदि रहे। विनोद पिंकू ने बताया कि इन प्रयासों के माध्यम से विद्यालय का वातावरण न केवल आकर्षक बन रहा है, बल्कि विद्यार्थियों में साफ-सफाई, अनुशासन एवं समाज सेवा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित हो रहा है।

खबर संक्षेप

दक्षिण काली नवदुर्गा मंदिर में कार्यक्रम

भिवानी। कोंट रोड, मिनी बाईपास, काली माता मंदिर रोड स्थित दक्षिण काली नवदुर्गा मंदिर में करवा चौथ के पावन अवसर पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। सुबह से ही सुहागिन महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में मंदिर पहुंचीं और माता के दर्शनों के साथ व्रत की पूजा-अर्चना की।

500 करोड़ से ज्यादा की परियोजनाएं मंजूर

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि एक साल के कार्यकाल के दौरान दादरी के लिए अब तक 500 करोड़ से ज्यादा की विकास परियोजनाओं का बजट मंजूर हुआ है। जिसमें अधिकांश कार्य शुरू हो चुके हैं और कुछ आगामी दिनों में शुरू होंगे। आने वाले समय में दादरी के विकास की रफ्तार बढ़ेगी और धरातल पर लोगों को परियोजनाएं साकार होती दिखाई देंगी।

सात दिवसीय श्रीराम कथा में उमड़ी आस्था

भिवानी। महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर में शुरू हुआ सात दिवसीय श्री राम कथा प्रेम यज्ञ शुक्रवार को अपने 5वें दिन भी भक्तों की अपार श्रद्धा और उत्साह के साथ जारी रहा। पुजारी ध्यानदास महाराज ने बताया कि यह आयोजन बालयोगी महंत चरणदास महाराज के सान्निध्य में संचालित किया जा रहा है।

बाढड़ा में किसानों का धरना जारी रहा

बाढड़ा। किसानों के बकाया मुआवजे, डीएपी किल्लत को दूर करने व किसानों के बाजरे की तत्काल प्रभाव से खरीद करने की मांग को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा द्वारा उपमंडल मुख्यालय पर धरना संचालित रहा। धरने को अनेक किसान, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पहुंच कर समर्थन देने का एलान किया।

आरटीआई पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन

भिवानी। चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के विधि विभाग द्वारा सूचना का अधिकार विषय पर एक विस्तृत व्याख्यान का आयोजन किया। कार्यक्रम में बतौर वक्ता प्रसिद्ध विद्वान प्रो. जीत सिंह मान ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विधि विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रमोद मलिक ने प्रो. जीत सिंह मान का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

सीजेआई पर जूता फेंकने व एडीजीपी आत्महत्या मामले में कार्रवाई की मांग

विभिन्न संगठन उतरे सड़कों पर, प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

अधिकारी के सुसाइट नोट में हालात और घटनाक्रम स्तब्ध करने वाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी में शनिवार को विभिन्न संगठनों ने एकजुट होकर सर्वोच्च न्यायानलय के मुख्य न्यायाधीश पर जूता फेंकने वाले को तुरंत एससी-एसटी धाराओं के तहत गिरफ्तार करने, एडीजीपी वाई पूर्ण कुमार की आत्महत्या मामले में उच्च स्तरीय जांच व दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर भिवानी में प्रदर्शन किया तथा प्रदर्शन करते हुए लघु सचिवालय पहुंचकर राज्यपाल के नाम मांगपत्र सौंपा। प्रदर्शन में किसान सभा, दलित अधिकार मंच, सीटू व जनवादी महिला समिति भिवानी ने एडीजीपी आत्महत्या को संस्थागत हत्या करार दिया तथा इसके लिए लिए संस्थानों व समाज में निरंतर जारी जातिगत भेदभाव व उत्पीडन को जिम्मेदार उठाया।

मुख्य न्यायाधीश मामले में आरोपी को गिरफ्तार करने व आत्महत्या मामले में उच्च स्तरीय न्यायिक जांच की मांग

उन्होंने कहा कि जब वरिष्ठ अधिकारी और न्यायाधीश ही सुरक्षित नहीं हैं तो साधारण जनता की हालत का अंदाजा लगाया जा सकता है। पार्टी ने कहा कि एडीजीपी आत्महत्या ामले में एफआईआर तो दर्ज कर ली गई है परन्तु यह जरूरी है कि समयबद्ध सीमा में निष्पक्ष जांच करके दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। संगठनों के प्रतिनिधियों ने आश्चर्य प्रकट किया है कि सरकार या मुख्यमंत्री ने अभी तक सार्वजनिक तौर पर ऐसा कुछ भी नहीं कहा है और न ही जनता कै आश्वस्त किया है कि वह ऐसे हालात को बदलने के लिए क्या ठोस कदम उठाएगी।

भिवानी। शहर में प्रदर्शन करते हुए विभिन्न सामाजिक संगठन के सदस्य।किसी अप्रिय घटना से बचने के लिए सचिवालय के बाहर तैनात पुलिस बल।

दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए

इस मौके पर जनसंगठनों की ओर से रामफल देशवाल, कामरेड ओमप्रकाश, सुखदेव पालवास, कामरेड अनिल कुमार व बिमला ने कहा कि आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार की मृत्यु के हालात की त्वरित निष्पक्ष जांच करके सभी दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए तथा उनके परिवार को समुचित सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि अधिकारी द्वारा लिखे गए अंतिम नोट में हालात और घटनाक्रम का जो विवरण सामने आया है, वह स्तब्ध करने वाला है।

भेदभाव की यह कोई इकलौती घटना नहीं

उन्होंने कहा कि भेदभाव की यह कोई इकलौती घटना नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज में बहुत गहरी पैठ बनाए हुए है और भाजपा व आरएसएस के सत्ता में आने के बाद इसे योजनाबद्ध तरीके से और मजबूत किया जा रहा है। हिन्दुत्व और सनातन के नाम पर दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों पर हमले किए जा रहे हैं तथा उनके खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय उन्हें प्रशासनिक और राजनीतिक संरक्षण दिया जा रहा है। इस जातिगत दुराग्रह का ताजा उदाहरण मुख्य न्यायाधीश पर जूता फेंकने में देखने को मिला।

जनता के सभी हिस्सों से आह्वान

संगठनों ने जनता के सभी हिस्सों से आह्वान किया है कि वह सरकार की ऐसी उदासीनता के खिलाफ ज़ोरदार आवाज उठाएं, ताकि सरकार जनता को आश्वस्त करने को मजबूर हो जाए कि वह संविधान के प्रावधानों के अनुसार सत्ता संचालन करेगी और सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने के लिए काम करेगी। इस अवसर पर सज्जन कुमार सिंगला, मास्टर वजीर सिंह, रतन कुमार जिंदल, करतार ग्रेवाल, नरेश शर्मा, राममेहर सिंह, उपासना सिंह, प्रताप सिंह, फूलचंद, संतोष देसवाल, राजाराम इत्यादि नेताओ ने संबोधित किया गया।

प्रतिनिधिमंडल ने एसडीएम से की मुलाकात

आईपीएस सुसाइड प्रकरण की निष्पक्ष जांच को लेकर कांग्रेस ने सौंपा ज्ञापन

चरखी दादरी। एसडीएम को ज्ञापन सौंपते कांग्रेसी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

आईपीएस अधिकारी वाई पुरन कुमार के सुसाइड मामले की निष्पक्ष जांच और देश के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई पर जूता फेंकने और रायबरेली के हरिओम की नृशंस हत्या के दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुशील धानक और एससी विभाग के जिला चेयरमैन राजेश बाल्मीकि की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमंडल ने एसडीएम योगेश सैनी को राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा। उन्होंने कहा कि रायबरेली के हरिओम बाल्मीकि की नृशंस हत्या को लेकर भी लोगों में भारी रोष है। सरकार की ढुलमुल नीतियों और त्वरित कार्यवाही ना होने से अपराधियों का हौंसला बढ़ता जा रहा है।

न्याय की मांग

कांग्रेस नेताओं ने इन गंभीर मुद्दों न्याय की मांग करते हुए कहा कि हरियाणा में ही नहीं पूरे देश में इन घटनाओं ने आम जनमानस को झकझोर के रख दिया है। यह देश में व्यापक जातिवादी व्यवस्था की भयावहता को दर्शाने के साथ संवैधानिक मूल्य और मौलिक अधिकारों के पतन और हनन की ओर स्पष्ट इशारा करती हैं। उन्होंने कहा कि जब देश के होनहार दलित आईपीएस अधिकारी या देश के सर्वोच्च न्यायालय के उच्चतम पद पर बैठे न्यायाधीश के साथ ऐसी घटनाएं होगी तो आम नागरिक में असुरक्षा की भावना का होना लाजमी है।

प्रतिनिधि मंडल में ये रहे शामिल

प्रतिनिधि मंडल में पूर्व सीपीएस रणसिंह मान, पूर्व विधायक कर्नल रघुबीर सिंह, किसान कांग्रेस के राष्ट्रीय कन्वीनर राजू मान, दलबीर गांधी, सुरेश पांडवानीय, रामनिवास पिचोपा, एडवोकेट सुनिल , महेश सैनी, संजय बिडलान, कर्ण आमोलिया, राजेश साहू, राजा नंबरदार, नवीन सैनी, मनोज सांगवान सहित इत्यादि उपस्थित थे।

सीबीपी कार्यशाला में बच्चों ने दिखाया उत्साह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सी.बी.एस.ई. की ओर से सीबीपी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य, सामाजिक सिद्धांतों और चरित्र के विकास से संबंधित शिक्षा देने से, उन पर ध्यान केंद्रित करने से रहा। साथ ही सीखने, सहयोग, समस्या समाधान एवं नए विचारों के सृजन को प्रोत्साहित करना रहा। परामर्श दाता के रूप में मॉडल संस्कृति विद्यालय कैरू (भिवानी) से आशुतोष एवं आइडियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सिंघानी (भिवानी) से कुलदीप ने शिरकत की। इस कार्यशाला में बी. के. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एवं खरक मॉडल संस्कृति विद्यालय से शिक्षक वर्ग उपस्थित रहा। सर्वप्रथम विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा, वरिष्ठ विभाग प्रमुख योगेंद्र सिंह एवं कनिष्ठ विभाग संचालिका मंजू मलिक ने आए हुए अतिथियों का पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत सत्कार किया।सर्वप्रथम मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन से कार्यशाला का शुभारंभ किया।

बवानीखेड़ा। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी व शिक्षक।

प्रभावशाली जवाब दिया

उन्होंने अध्यापक वर्ग से अनुरोध किया कि वे अपने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति से जोड़ कर रखें। उन्होंने कहा कि आप अपने विद्यार्थियों के अंदर कृतज्ञता, दयालुता, हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण, रचनात्मकता जैसे गुणों को विकसित करें। इस दौरान उन्होंने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक वर्ग से बीच-बीच में प्रश्न भी पूछे जिसका शिक्षक वर्ग में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया

सभी का आभार जताया

विद्यालय ने परामर्शदाता का धन्यवाद कर सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने शिक्षक वर्ग के प्रति उम्मीद जताते हुए कहा कि अवश्य ही वे इस कार्यशाला द्वारा अर्जित अनुभव को अपने कक्षा कक्ष में प्रयोग करेंगे। इस अवसर पर विद्यालय में भोजन का समुचित प्रबंध मनीष शंकर, अशोक जाखड़ एवं प्रमोद बंसल के द्वारा किया गया एवं अमित कुमार, कविता, कृष्ण कुमार, आनंद कुमार, सहित समस्त विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

किरोड़ीमल शिक्षण महाविद्यालय में व्यक्तित्व विकास पर एक विस्तार भाषण का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

सेठ किरोड़ीमल चैरिटी ट्रस्ट द्वारा संचालित किरोड़ीमल शिक्षण महाविद्यालय में व्यक्तित्व विकास पर एक विस्तार भाषण का आयोजन किया गया। महाविद्यालय कार्यकारिणी के महासचिव मनीष कुमार सिंघानीया ने मुख्य वक्ता डा. संजीव वशिष्ठा को गुलदस्ता देकर स्वागत किया। प्राचार्य डा. राजीव कुमार ने मुख्य वक्ता का विद्यार्थियों से परिचय करवाया। डा. संजीव वशिष्ठा ने अपने व्याखान में बताया की आज के युग में व्यक्तित्व विकास के बिना इस विज्ञान तथा तकनीकी के युग में किसी भी इंसान का सफल होना असंभव है। डिग्री लेने मात्र से कोई व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता।

भिवानी। छात्राओं को संबोधित करते एक वक्ता।

कार्यक्रम में यह रहे मौजूद

डा. राजीव कुमार प्राचार्य ने वक्ता के विचारों को सारांश देते हुये विद्यार्थियों का बताया की व्यक्तित्व विकास में सबसे अनिवार्य जो घटक होते है वो है मानवता, सहीष्णुता, समय का पाबन्ध एवं उत्तरदायित्व। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के विद्यार्थी, डा. यतिन गोयल, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिमानी, असिस्टेंट प्रोफेसर, आरती, असिस्टेंट प्रोफेसर, कृति, असिस्टेंट प्रोफेसर, लीना, असिस्टेंट प्रोफेसर, खुशबु, असिस्टेंट प्रोफेसर, कोमल, असिस्टेंट प्रोफेसर, सोनू भारद्वाज, सज्जन कुमार सुथार व अन्य स्टाफ सस्दय उपस्थित रहे।

बकाया भुगतान, पेंशन लाभ आदि मांगों के लिए रोष जताया

बाढड़ा में मिड डे मील वर्कर्स ने पक्की नौकरी की लगाई गुहार

सरकार को जल्द समाधान करने का अल्टीमेटम देते हुए 28 को जिला मुख्यालय पर रोष प्रदर्शन करेंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढड़ा

मिड डे मील कार्यकर्ताओं ने न्यूनतम वेतन बढोतरी, पक्की नौकरी, बकाया भुगतान, पेंशन लाभ आदि मांगों के लिए सरकार को जल्द समाधान करने का अल्टीमेटम देते हुए 28 अक्टूबर को जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन करने की घोषणा की। बिजली घर परिसर में मिड डे मील कार्यकर्ताओं की बैठक की अध्यक्षता मिड-डे मील अध्यक्ष राकेश देवी ने की जिसमें लंबित मांगों को लेकर मंथन किया गया व सरकार द्वारा सुध न लेने पर रोष प्रकट किया।

बाढड़ा। कस्बे में मिड डे मिल कर्मचारियों की बैठक में मौजूद कार्यकर्ता।

मानदेय में कटौती करने का आरोप लगाया

बैठक को संबोधित करते हुए सीटू राज्य उपाध्यक्ष कामरेड सुखबीर सिंह ने कहा कि आज मिड डे मील वर्करो की बैठक की गई जिसमें जिला दादरी में 28 अक्टूबर मांगों को लेकर डीईओ कार्यालय पर प्रदर्शन करने का फैसला लिया गया। पदाधिकारियों ने बताया कि कई कई महीनों से वर्कर्स का मानदेय नहीं दिया जा रहा है। वर्दी का पैसा भी स्कूलों में नहीं मिल रहा। मानदेय में कटौती की जा रही हैं। सरकार व प्रशासन मिड डे मील वर्कर्स का शोषण कर रहा है। मानदेय भी 10 महीने मिलता है जबकि काम तो करीबन 11 महीने करना पड़ता है। इसीलिए शिक्षकों व अन्य स्टाफ की तरह 12 महीने वेतन मिलना चाहिए व यह 26हजार रूपये से कम नहीं होना चाहिए। स्कूल में डयूटी के दौरान भोजन बनाते हुए दुर्घटनाओं में घायल हो जाते हैं, वर्करों की मौत हो जाती है लेकिन किसी प्रकार की आर्थिक मदद का प्रावधान नहीं है। जिला सचिव सुमेर सिंह धारणी व मिड डे मील ब्लॉक कोषाध्यक्ष अंजू देवी ने कहा कि यह बहुत दुखद है कि महिलाओं के सशक्तिकरण का दावा करने वाली केन्द्र सरकार द्वारा पिछले 11 साल से मिड डे मील वर्कर्स के मानदेय में एक रूपये की भी बढ़ौतरी नहीं की गई। न्यूनतम वेतन 26 हजार रूपये की मांग को अनदेखा किया जा रहा है।

ऐसे कैसे चलेगा गुजारा

जिला सचिव सुमेर सिंह धारणी व मिड डे मील ब्लॉक कोषाध्यक्ष अंजू देवी ने कहा कि कम बच्चों वाले स्कूलों को बंद किया जा रहा है और स्कूल मर्ज किए जा रहे हैं। आखिर कैसे घर का गुजारा चलेगा। सभी पदाधिकारियों ने विचार विमर्श के बाद सरकार को जल्द समाधान करने का अल्टीमेटम देते हुए 28 अक्टूबर को जिला मुख्यालय पर रोष प्रदर्शन करने की घोषणा की। उनके अलावा मिड डे मिल कार्यकर्ता कविता देवी, निर्मला देवी, राकेश कुमार, सुनीता देवी, मुकेश खोसला, सुनीता, अनीता, सरोज, सुशीला, सुशीला, भतेरी देवी, राजबाला, सुमन, कौशल्या आदि मौजूद रहे।

हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा की जिला स्तरीय बैठक आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा की जिला कार्यकारिणी की बैठक प्रधान डा. बृजपाल सिंह पप्पू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। यह जानकारी देते हुए सभा के प्रवक्ता वेदपाल सिंह परमार ने बताया कि बैठक में विभिन्न विषयों को लेकर प्रस्ताव पास किए गए। बैठक में सदस्यता अभियान चलाने, खरीदारी करने व संदेश वाहिनी पत्रिका प्रकाशित करने बारे प्रस्ताव पास किए गए। उन्होंने बताया कि एडवोकेट जयपाल सिंह को सदस्यता अभियान कमेटी, प्रेम सिंह को खरीदारी कमेटी तथा कर्नल जगदीश सिंह को संदेश वाहिनी पत्रिका कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया।

कंवर को जिम्मेदारी सौंपी

कंवर सिंह परमार को पारितोषिक वितरण व दस्तावेज एकत्रित करने की जिम्मेवारी सौंपी। प्रधान डा. बृजपाल सिंह पप्पू ने बताया कि 21 दिसंबर हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया जाएगा। इस समारोह में कक्षा 10वीं व 12वीं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले तथा बीए में 65 प्रतिशत, एमबीबीएस, आईआईटी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान, खेलों में राजपूत समाज का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों, उच्च पदों पर विराजमान अधिकारियों, 80 वर्ष से अधिक आयु वाले बुजुर्गों को सम्मानित किया जाएगा।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 12 अक्टूबर 2025
P-1

दीपावली सदियों से धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाई जा रही है। लेकिन अब इसका स्वरूप राष्ट्रीय, आर्थिक और भावनात्मक एकता का रूप ले चुका है। दीपावली की चमक अब केवल तेल के दीयों में नहीं रही बल्कि डिजिटल स्क्रीन, वैश्विक समारोहों, आर्थिक गतिविधियों में भी हर जगह भारत की सांस्कृतिक शक्ति के रूप में झिलमिलाती है।

धर्म-संस्कृति-आस्था के साथ अर्थव्यवस्था का महापर्व दीपावली

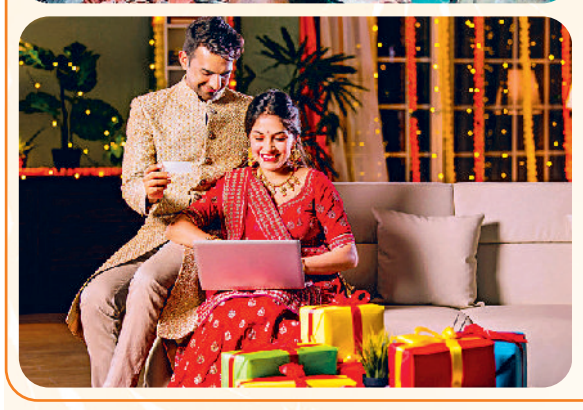

{ आवरण कथा }
शैलेंद्र सिंह

दीपावली अगर पहले के दौर में केवल दीप और पूजा का पर्व था, तो आज यह डिजिटल भारत की संपन्नता और सशक्ति का प्रतीक बन चुकी है। आज हर राज्य, हर भाषा और हर वर्ग के लोग अलग-अलग तरीके से दीपावली को जोरदार तरीके से सेलिब्रेट कर रहे हैं। यह भारत के किसी भी अखिल भारतीय उत्सव का सबसे बड़ा सिंबल है। एक जमाना था, जब गांवों में मिट्टी के दीयों से रोशनी की कतार झिलमिलाती थी। आज उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, देश के सभी शहरों में एलईडी की इंद्रधनुषी झालरें दीपावली के मौके पर संपन्नता की अठखेलियां करती हैं। साथ ही ऑनलाइन दुनिया में डिजिटल ग्रीटिंग्स की भरमार है। दरअसल, दिवाली अब हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक वजूद का इंजन बन चुकी है।

होगी कई लाख करोड़ की खरीदारी

दीपावली अब केवल आस्था का त्योहार नहीं बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का महापर्व है। यकीन न आए तो कुछ आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं। साल 2024 की दीपावली तिमाही में खरीदारी तकरीबन 4.5 लाख करोड़ तक पहुंच गई थी। इस साल अनुमान है कि यह आंकड़ा 6 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। मतलब बिहार जैसे राज्य के लगभग दो सालों का समूचा सालाना बजट के बराबर दिवाली के मौके पर खरीदारी में खर्च हो जाएगा। अकेले ई-कॉमर्स सेक्टर में ही दीपावली के आस-पास अब तक 90 हजार करोड़ की ऑनलाइन बिक्री हो चुकी है। उम्मीद है कि यह तकरीबन पौने दो से दो लाख करोड़ तक पहुंचेगी। ऑटो मोबाइल्स, रियल एस्टेट, इलेक्ट्रॉनिक और ज्वेलरी जैसे क्षेत्र में इस सीजन बिक्री के नए मानदंड रचे जाने हैं। मतलब यह कि दिवाली अब भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कती नब्ज बन चुकी है।

डिजिटल कंपनियों को भी रहता है इंतजार

यह त्योहार अब केवल धार्मिक नहीं, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता का भी बड़ा अवसर बन चुका है। आज दीपावली एक किसान से लेकर स्टार्टअप फाउंडर तक के लिए आर्थिक रोशनी की नई उम्मीद बनकर आती है। इस डिजिटल युग में दीपावली सिर्फ घरों या मंदिरों तक नहीं सीमित बल्कि सोशल मीडिया, डिजिटल क्रिएटिविटी और तकनीकी नवाचार का त्योहार बन गई है। 'हैप्पी दीपावली' कहना या लिखना, हर साल दुनियाभर के ट्रेंडिंग टॉपिक्स में शामिल रहने वाला सबसे हॉट विषय होता है। गूगल और एप्पल जैसी कंपनियां दीपावली का महीनों पहले से इंतजार करती हैं। इस मौके पर विशेष डूडल और थीम्स जारी करती हैं। डिजिटल आर्टिस्ट और कंटेंट क्रिएटर्स दीपावली को भारतीय पहचान का वैश्विक प्रतीक मानते हैं। भारत के स्टार्टअप इस मौके पर विशेष फेस्टिव कैंपेन लांच करते हैं जैसे- मेड इन इंडिया जिसमें एक नया संदेश छिपा होता है। कहने का मतलब यह कि दीपावली अब घर-घर की नहीं बल्कि स्क्रीन-स्क्रीन की रोशनी बन चुकी है और पूरे भारत को एक डिजिटल सांस्कृतिक धारा में जोड़ रही है।

बन चुका है ऑल इंडिया फेस्टिवल

आज दीपावली भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे जा चुकी है। जहां पहले लोग कहते थे कि हर राज्य अपने-अपने तरीके से दीपावली मनाता है, वहीं अब देखा जा रहा है कि यह संपूर्ण भारत का एक साझी रंगत वाला त्योहार बन चुका है। मॉल्स, कालोनियां, ऑफिसेस, हाउसिंग सोसायटी आदि सब जगह दीपावली के अखिल भारतीय सेलिब्रेशन के दर्शन होते हैं। आज दिवाली भाषा, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय उत्सव बन चुकी है, जो सभी भारतीयों को एक साझा पहचान देती है।

विदेशों में भी जगमगाती दीपावली

आज दुनिया में ब्रांड इंडिया की चमक का एक हिस्सा जगमग दीपावली भी है। भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में देखें तो दीपावली उसकी सिग्नेचर इमोशन बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई और सिंगापुर में इंडियन दिवाली नाइट आयोजित होती हैं। बुर्ज खलीफा पर भारतीय दिवाली की लाइट शो अब हर साल की परंपरा है। व्हाइट हाउस में, ब्रिटिश पार्लियामेंट और कनाडा में, लेचिसलेचर और दीपावली के दीये जलाना अब ग्लोबल सॉफ्टपावर का प्रतीक है। जरा गौर कीजिए इन आयोजनों के केंद्र में सिर्फ धार्मिकता नहीं होती बल्कि भारतीय आधुनिकता, बहुलता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं। यह वही आत्मविश्वास है, जो बताता है कि भारत अपनी परंपरा को 21वीं सदी के फ्रेम में फिट करने में सक्षम है।

आधुनिकता-आर्थिक संपन्नता का प्रतीक

देश के हर क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों की चरम स्थिति, छोटे दुकान से लेकर ई-कॉमर्स के दिग्गज तक दीपावली को अपनी ताकत से जोड़ते हैं। इस तरह यह एक फेस्टिवल टेक्नोलॉजीकरण भी है। डिजिटल पेमेंट, ई-गिफ्ट और सोशल मीडिया ने त्योहार को एक साझा राष्ट्रीय अनुभव बना दिया है। इसलिए दीपावली अब भारत का कल्चरल एक्सपोर्ट बन चुकी है, जो भारतीय प्रवासियों के माध्यम से विश्व स्तर पर मनायी जाती है। कुल मिलाकर दीपावली अब महज एक धार्मिक या सांस्कृतिक त्योहार भर नहीं बल्कि यह भारत की आर्थिक ताकत और आधुनिकता का सबसे सशक्त प्रतीक बन चुका है। *

देश का पावरफुल कल्चरल सुपर ब्रांड

आज के दौर में दीपावली आधुनिक भारत का सबसे पावरफुल सुपर ब्रांड बन चुकी है। हर सफल आधुनिक राष्ट्र के पास एक साझा भावनात्मक प्रतीक होता है। जैसे अमेरिका के पास थैंक्स गिविंग, चीन के पास स्प्रिंग फेस्टिवल, जापान के पास चेरी ब्लॉसम फेस्ट, उसी तरह भारत के पास दीपावली जैसा पर्व है। यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक आकांक्षाओं को भी बहुत करीब से व्यक्त करता है। दीपावली आज महज एक सालाना पर्व नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई, हमारी तकनीकी उन्नति की चमक, व्यापार की मजबूती, उसकी सक्रियता और सामाजिक एकता की प्रतीक भी बन चुकी है यानी, दिवाली अब केवल धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधि है, जो भारत को परंपरा से प्रगति तक जोड़ने वाला पुल बनाती है। दीपावली आज अखिल भारतीय आधुनिक संस्कृति की धुरी है। हर भारतीय समुदाय हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख अपने-अपने अर्थों में इसे अपनी विरासत का जीवंत हिस्सा मानते हैं।

एक समय तक दीपावली के मौके पर परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ खेल के तौर पर जुआ खेलने की परंपरा रही। लेकिन हाल के वर्षों में ऑनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग की लत ने बड़ा सामाजिक-आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। इस बारे में अवेयर रहने की जरूरत है।

भारी नुकसान दे सकती है ऑनलाइन गेमिंग की लत

{ अवेयरनेस }
एन.के. अरोड़ा

शगुन और परंपरा के नाम पर जिस तरह से हाल के सालों में लोगों द्वारा दीपावली के मौके पर ऑनलाइन जुए का ट्रेंड बढ़ा है, उसके कारण गैंबलिंग की लत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक चिंता का भी विषय है। परंपरा के नाम पर आजमाई जा रही इस खतरनाक आदत के कारण लोगों की जिंदगी ही आर्थिक संकट से घिर गई है।

परंपरा के नाम पर ऑनलाइन गेमिंग: यह मान्यता है कि दीपावली के अवसर पर जुआ खेलना शुभ होता है। इसलिए लोग परंपरा के नाम पर आमतौर पर दीपावली के मौके पर आपस में जुए की गतिविधियों पर हाथ आजमाते हैं। लेकिन कई बार इसके जरिए दीपावली जैसे रोशनी, मेलजोल और खुशियों के त्योहार को परेशानियों का सबब बना लेते हैं। नतीजतन रोशनी के इस त्योहार के ऐन मौके पर उनके घरों में परेशानियों का अंधेरा छा जाता है।

बुरा एडिक्शन है ऑनलाइन गेमिंग: दीपावली की रात ही नहीं ऑनलाइन गैंबलिंग ऐसा एडिक्शन बन गया है, जो सामान्य दिनों में भी लोगों की बर्बादी का कारण बन रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पुलिस भी इस बुराई पर चाहकर भी प्रभावी प्रतिबंध नहीं लगा पाती, क्योंकि यह सारी गतिविधि एक स्मार्टफोन की स्क्रीन या किसी डिजिटल एप्स तक सिमटकर रह गई है, जो एक क्लिक के साथ ही हमारी पकड़ से बहुत दूर जा चुकी होती है।

क्यों-कैसे फंस जाते हैं इस दुष्चक्र में: पहले जुआ खेलने के लिए ऐसी कोई खास सुरक्षित जगह ढूंढ़नी पड़ती थी, जहां तक पुलिस और समाज पर नैतिक दबाव बनाने वाले लोगों की पहुंच न हो या इन लोगों को यहां तक पहुंचने में मुश्किल हो। लेकिन आज की तारीख में ऑनलाइन गेमिंग या मोबाइल के स्क्रीन पर संपन्न होने वाला जुआ इतना आसान हो गया है कि हम जब चाहें और जहां से चाहें, इसे खेल सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों, अरबों के आर्थिक आधार वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इसके लिए हमें बोनस और विज्ञापन के जरिए ललचाती हैं। साथ ही लोगों को डिजिटल गतिविधियों के जरिए ललचाकर फंसाने वाली कंपनियां 'दिवाली ऑफर', 'लकी स्पिन', 'कैश बोनस', जैसी रसीली बातों से हमें फांसते हैं और देखते ही देखते हम इन पैसे चूसने वाली स्कीमों के चक्कर में फंस जाते हैं। बस एक जीत के जरिए जिंदगी को मालामाल करने की तमन्ना से हम अपने पास जो भी होता है, सब कुछ बड़ी आसानी से गंवा देते हैं और इस तरह धोखे-धोखे में लाखों, करोड़ों लोग ऑनलाइन गेमिंग में फैले गैंबलिंग के खेल से कंगाल हो जाते हैं।

गंवा देते हैं हजारों करोड़: हर साल लाखों लोगों की बर्बाद कहानियों के बावजूद, लोग इनसे सबक लेने की बजाय अगली बर्बाद कहानियों का हिस्सा बनने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पिछले पांच सालों से हर साल दीपावली के मौके पर अनुमानतः आम लोग 15 से 20 हजार करोड़ रुपए तक इस ऑनलाइन जुए में गंवा बैठते हैं, जो उनकी जिंदगीभर की गाढ़ी कमाई होती है। यही कारण है कि आजकल रोशनी के इस पर्व में हर साल लाखों लोगों की जिंदगी में हमेशा-हमेशा के लिए अंधकार भर जाता है।

कानूनी स्थिति: हालांकि पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 के तहत जुआ एक सार्वजनिक सामाजिक अपराध है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी हथेली में अटके मोबाइल की स्क्रीन पर धूम-धड़ाके से चलने वाली जुए की महफिलों पर कानून नहीं लागू होता था। हालांकि इस सबके बावजूद तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग के कई रूपों पर प्रतिबंध लगाया है, बावजूद इसके दिवाली की रात जुए के लिए बेकरार करोड़ों लोगों को यह आंशिक प्रतिबंध बर्बाद होने से नहीं बचा पाते। यही वजह है कि जोर-शोर से लाखों लोग ऑनलाइन गेमिंग पर हर तरह से प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं। लेकिन आजादी और लोकतंत्र के नाम पर उतने ही लोग इसे रेगुलेट करने की वकालत करते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोगों के ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बाद हो जाने के बावजूद इस पर प्रतिबंध नहीं लग रहा। हालांकि 1 अक्टूबर से देश भर में ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025 लागू हो गया है। इसमें रियल मनी गेमिंग संचालित करने वाली कुछ कंपनियों और एप्स पर बैन लगा दिया गया है। इसका प्रचार करने वालों पर भी कड़े दंड का प्रावधान है।

दूर रहने का लें संकल्प: दीपावली की रोशनी तभी हमारे लिए सार्थक होगी, जब वह हमारे परिवारजनों के चेहरों पर खुशियों का उजास फैलाए, न कि ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बादी का अंधेरा छाए। इसलिए इस साल ऑनलाइन गेमिंग से दूरी बनाने के लिए संकल्प लें। *

{ गजल }
अब्दुल कलाम

मन के फेर हैं बाबा

इधर देखो जिधर देखो मचा अंधेर है बाबा
सलामत दिन निकल जाए तो समझो खैर है बाबा

कोई सूरत तो फिर निकले कि सच का बोल-बाला हो
मगर निकले भी कैसे झूठ इतना दिलेर है बाबा

आग की जद में शहर जो आ गया तो फिर
बचेगा कुछ नहीं हिजरत में फिर क्यों देर है बाबा

मिटाने हम चले हैं देश की फिरका परस्ती को
जहां पर खून के रिश्तों में देखे बैर है बाबा

यहां सर पे कफन हमने ही बांधा वक्त जब आया
वो कहते हैं कि हम उनके लिए अब गैर हैं बाबा

फाइलों में दब के रह जाती है अब फरियाद भी
कोर्ट-कचहरी न्याय सब मन के फेर हैं बाबा

{ लघुकथाएं }

अनमोल लम्हे

रिटायरमेंट के बाद निर्माण नगर में ही रहना विनीत। सभी दोस्त साथ में मस्ती करेंगे।' शैलेंद्र ने विनीत से कहा, जब वह किसी काम से निर्माण नगर आया हुआ था।

'हां! देखता हूं।' विनीत ने कहा। पर मन ही मन वह सोच रहा था कि क्या है इस शहर में? दिल्ली में जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां कितना अच्छा पार्क है, जिम है, स्विमिंग पूल है। हर अवसर पर कुछ न कुछ बढ़िया कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अच्छा जीवन कटेगा वहां। यही सब सोचकर रिटायरमेंट के बाद विनीत निर्माण नगर के बजाय दिल्ली में ही बस गया। सुबह मॉर्निंग वॉक, फिर जिम और उसके बाद स्विमिंग। बीच-बीच में सोसायटी की मीटिंग और अकसर तरह-तरह के कार्यक्रमों में शामिल होना। विनीत का यही रूटीन हो गया था। वह सोचने लगा कि जीवन का पूरा मजा वह ले रहा है।

कुछ समय बाद उसे किसी काम से फिर निर्माण नगर जाने का मौका मिला। तब तक उसके अधिकांश दोस्त रिटायर हो चुके थे। उसने देखा कि सुबह-सुबह कई दोस्त मॉर्निंग वॉक पर इकट्ठे होते हैं। फिर शुरू होती हैं बचपन की बातें और हंसी-ठहाके। कोई अपने टीचर के नकल उतारने वाली हरकत के बारे में बताता तो कोई एक-दूसरे के साथ की जाने वाली शैतानियों के किस्से सुनाता। और भी कई तरह-तरह की बातें वे सब आपस में करते हैं। इसी तरह शाम को भी सारे दोस्त इकट्ठे हो जाते और फिर शुरू हो जाता ठहाकों का दौर। दिल खोल कर हंसते थे सभी दोस्त। ऐसा लगता मानो फिर से वे बचपन की मस्ती का आनंद लेने लगे हों।

अपने दोस्तों के मस्ती भरे अंदाज को देखकर विनीत सोचने लगा वैसे तो दिल्ली में जीवनशैली और सुख-सुविधाएं यहां से बेहतर हैं, पर बचपन के दोस्तों के साथ यह मौज-मस्ती वहां नहीं मिल पाती है। विनीत ने मन ही मन खुद से कहा, 'सच में ये आनंद भरे पल अनमोल हैं।' *

-विनय कुमार पाठक

फॉलोवर्स

आदित्य ने सुबह नींद से जगते ही अपना इंस्टा अकाउंट चेक किया। 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख हो गई है।' मोबाइल पर नोटिफिकेशन था। आदित्य जोश में आ गया। मुट्ठियां बंद कर हाथों को झटकते हुए कहा, 'यस!' वह काफी दिनों से अपने इंस्टा अकाउंट पर फॉलोवर्स की संख्या बढ़ाने की कोशिश में लगा हुआ था। आदित्य मुंबई में रहता है। उसका टू बीएचके फ्लैट है। कुछ वर्ष पहले उसके मम्मी-पापा की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी। वह उनकी अकेली संतान है। बस उसके दादाजी हैं, जो मुंबई से दूर एक गांव में रहते हैं। जब तक मम्मी -पापा रहे तब तक वह उनसे मिलने जाता था। उसके बाद वह कभी गांव नहीं गया। अभी वह अपना मोबाइल देख ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने एक बुजुर्ग आदमी थे।

'जी कहिए..।'

'तुम निशिकांत के पोते आदित्य हो?'

'जी, आप कौन?'

'मैं दयाल! निशिकांत ने मुझे भेजा है। उसकी तबीयत बहुत खराब है। शायद अब ज्यादा जीवित न रहे। मरने से पहले तुमको देखना चाहता है। मेरे साथ अभी गांव चलो।'

'अभी! एकदम से?'

'हां, नहीं तो शायद तुम अपने दादाजी को आखिरी बार भी ना देख सको।'

'देखिए, अभी मेरे पास बहुत सारे जरूरी काम पेंडिंग हैं। ऐसा करिए, आप जाकर उनसे कह दीजिएगा, मैं रविवार को आऊंगा। हां मेरा मोबाइल नंबर भी लेते जाइए। मुझे फोन पर दादाजी से बात करा दीजिएगा।'

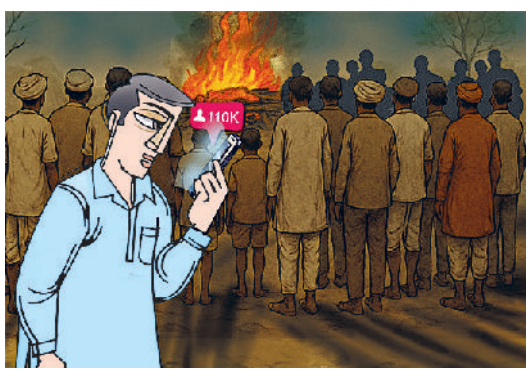

दयाल निराश होकर वापस लौट गए। आदित्य चंद मिनटों तक दादाजी के बारे में सोचता रहा। जैसे ही उसे फॉलोअर्स का ख्याल आया वह उन्हें भूल गया। उसके हाथ तेजी से मोबाइल पर चलने लगे। अगले दिन सुबह-सुबह उसके पास फोन आया, 'तुम्हारे दादाजी नहीं रहे।' दयाल की ही आवाज थी।

'ओह! मैं आता हूं।' आदित्य ने कहा। उसने फौरन अपने बैग में दो जोड़ी कपड़े लिए और गांव के लिए रवाना हो गया। करीब पांच-छह घंटे का रास्ता था। मगर जिस ट्रेन में वह बैठा था, वह जगह-जगह रुक रही थी। छह घंटों में वह आधे रास्ते भी न पहुंच सका। अगले स्टेशन पर पहुंचकर वह ट्रेन से उतर गया और गांव जाने वाली बस पकड़ ली। मगर दुर्भाग्य कि बीच में सड़क धंसने से बस आगे न जा सकी। गांव अब भी तीस किलोमीटर दूर था। वह बाइक सवारों से लिफ्ट लेता हुआ किसी तरह गांव पहुंचा। तब तक काफी देर हो चुकी थी। सूरज ढल चुका था। अंधेरा हो रहा था। हर ओर सूनापन फैल रहा था। दादाजी के घर के दरवाजे पर कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उसने उनसे दादाजी के बारे में पूछा।

'हमें लगा अब तुम नहीं आओगे। इसलिए गांव वाले उनको श्मशान घाट ले गए।' वह श्मशान घाट की ओर दौड़ा। उसके दादाजी का शव चार लोग अपने कंधे पर उठाए चले जा रहे थे। पीछे-पीछे ढेर सारे गांव वाले थे। वह वहीं ठिठक गया। उसे तो लगा था, उसके बिना दादाजी को भला कौन कंधा देगा। मगर यहां तो पूरा गांव है दादाजी के पीछे। गांव वालों ने चिता सजाई और दादाजी का शव अग्नि को समर्पित कर दिया। आदित्य भीड़ के पीछे ही ठिठका रहा, आगे नहीं आया। तभी उसके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आया 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख दस हजार हो गई है।' *

-सरस्वती रमेश

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

जिंदगी@मगनपुर इस्टेट

वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का तीसरा उपन्यास 'जिंदगी@मगनपुर इस्टेट' हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इस नॉस्टेल्जिक उपन्यास का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग शख्स विमान भौमिक है, जो मगनपुर इस्टेट में बिताए अपनी किशोरावस्था के दिनों को याद करता है। लेकिन उसमें कहीं भी भावुकता का अतिरेक या पुराने दिनों के प्रति मोह की सांद्रता नजर नहीं आती है। वो खिलंदड़े अंदाज में बीती हुई घटनाओं को याद करता है। पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक के बीच की पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास, उस दौर के मध्यवर्गीय परिवार के किशोरों की जीवनशैली, उनके सपने, उनकी बचकानी हरकतें और छोटी-छोटी खुशियों को भी बटोर लेने की उनकी ललक को बहुत रोचक तरीके से सामने लाता है। हालांकि इस उपन्यास का कथानक और उसमें उपस्थित सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन जो भी लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वो सहज ही इस उपन्यास के कथा-तंतुओं से वास्तविक छवि को बुन सकते हैं। लेखक के किस्सागोई के अंदाज में पाठक को बांधे रखने का जादुई सामर्थ्य है। *

पुस्तक: जिंदगी@मगनपुर इस्टेट (उपन्यास)
लेखक: गोविंद उपाध्याय, **मूल्य:** 299 रुपए,
प्रकाशक: सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली

अमेजिंग स्पॉट्स / रजनी अरोड़ा

इन दिनों फेस्टिवल सीजन चल रहा है। आपके घर के आस-पास और बड़ी मार्केट्स में खूब रौनक और भीड़-भाड़ दिख रही होगी। बाजार ऐसा स्थान होता है, जहां से हम सभी अपनी जरूरत का हर सामान खरीद सकते हैं। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी बाजार हैं, जो अपनी खूबसूरती, भव्यता, अद्भुत सामानों की बिक्री और अनोखेपन के कारण बहुत मशहूर हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे बाजारों और उनकी विशेषताओं पर एक नजर।

ये हैं दुनिया के कुछ अनोखे-प्रसिद्ध बाजार

डम्नोएन सडुआक फ्लोटिंग मार्केट

यह अनोखा बाजार थाईलैंड में बैंकॉक से लगभग 100 किमी. दक्षिण-पश्चिम में राजबुरी इलाके में लगता है। डम्नोएन मार्केट थाईलैंड के सबसे मशहूर और बड़े तैरते हुए बाजारों में से एक है। इस

बाजार का निर्माण 19वीं सदी के अंत में तत्कालीन राजा रामचतुर्थ के आदेश पर हुआ था। जिसका उद्देश्य माइकलोंग और थाची नामक नदियों को आपस में जोड़ना और उनके माध्यम से व्यापार को सुगम बनाना था। आज यह बाजार सदियों पुरानी थाई परंपरा को दर्शाता है। यहां महिला विक्रेता ज्यादा हैं, जो पारंपरिक कपड़े पहनकर लकड़ी की छोटी नावों पर सामान बेचती हैं। इनमें फल, सब्जियां, ताजा पका हुआ स्ट्रीट फूड, स्थानीय उत्पादों के साथ-साथ हस्तशिल्प का सामान होता है। यह बाजार सुबह सात से नौ बजे तक सबसे अधिक व्यस्त रहता है। इच्छुक खरीदार ही नहीं, इस अनोखी फ्लोटिंग मार्केट में घूमने और इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक भी नाव से आते हैं।

ईमा कीथेल मार्केट

यह अनोखा बाजार भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की राजधानी इंफाल में लगता है। यह बाजार लगभग 500 वर्ष पुराना है और एशिया के सबसे बड़े बाजारों में गिना जाता है। ईमा केथेल बाजार की नींव 16वीं शताब्दी में लल्लुप काबा के विरोधस्वरूप हुई मानी जाती है। उस समय पुरुषों को जबरन बंधुवा मजदूर बनाने और दूरदराज के क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजने की प्रथा थी। जिसके चलते महिलाओं को घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। उन्हें खेती, विभिन्न खाद्य पदार्थ, घरेलू सामान, परंपरागत सिलाई-बुनाई, हस्तकला निर्मित वस्तुओं का निर्माण,

मछली पकड़ने जैसे कार्य करके अपने उत्पाद बेचने पड़े। तभी यह बाजार अस्तित्व में आया।

आज ईमा कीथेल मार्केट दुनिया में एकमात्र ऐसा बाजार है, जो पूरी तरह से महिला विक्रेताओं तकरीबन (6000) द्वारा संचालित किया जाता है। ईमा कीथेल नाम का मणिपुरी भाषा में अर्थ मां का बाजार है, जिसमें प्रायः सभी दुकानदारों को ईमा या मां कह कर संबोधित किया जाता है। यह मुख्यतया तीन खंडों में बंटा हुआ है। जहां घरेलू सामान, फल-सब्जियां, मसाले, विभिन्न प्रकार के जलीय जीव, मणिपुरी पारंपरिक वस्त्र और बुनाई के उत्पाद मिलते हैं। यह केवल एक व्यापारिक केंद्र नहीं, बल्कि मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, गौरव और सामाजिक-आर्थिक महत्व का एक जीवंत प्रतीक है।

मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट

थाईलैंड के सामुन सोंग खराम प्रांत में लगने वाली मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट को स्थानीय भाषा में तलात रोखूप या फोल्डिंग अंब्रेला मार्केट भी कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे अनूठे और रिस्की बाजारों में से एक है। यह बाजार अपनी बिक्री वाले सामान के लिए नहीं, बल्कि एक्टिव रेलवे ट्रैक के किनारे बने होने और भारी आवाजाही के कारण मशहूर है। यानी, बाजार के दुकानदार ही नहीं, खरीदार भी रेलवे ट्रैक पर सामान खरीदते-बेचते हैं। यहां ताजे फल, सब्जियां, समुद्री भोजन और अन्य घरेलू सामान मिलता है। इस बाजार का सबसे बड़ा आकर्षण और अनोखापन है ट्रेन का बाजार के बीचों-बीच दिन में आठ बार गुजरना। जैसे ही ट्रेन के आने का हॉर्न बजता है, सभी दुकानदार रेलवे ट्रैक तक पहुंचने वाले अपनी-अपनी दुकान के तिरपाल, छतरियां और सामान तुरंत हटा लेते हैं। रेलवे ट्रैक पर बेखौफ चलने वाले खरीदार भी रास्ता देकर ट्रेन के गुजरने का इंतजार करते हैं। ट्रेन के चले जाने पर बिना देर किए दुकानें फिर सजा लेते हैं और कुछ पलों के लिए थमे बाजार की रौनक दुबारा शुरू हो जाती है। यह अनूठी दिनचर्या जहां स्थानीय वाणिज्य और रेल परिवहन के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण है, वहीं यहां आने वाले पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

ग्रैंड बाजार

तुर्की देश के इस्तांबुल शहर में स्थित ग्रैंड बाजार को तुर्की भाषा में कापाली चार्शी कहा जाता है। इसका निर्माण 1455 में ऑटोमन साम्राज्य के सुल्तान मेहमेद द्वितीय के आदेश पर शुरू हुआ था। अपनी जटिल वास्तुकला, गुंबददार छत और ऐतिहासिक भव्यता के कारण यह बाजार सिर्फ

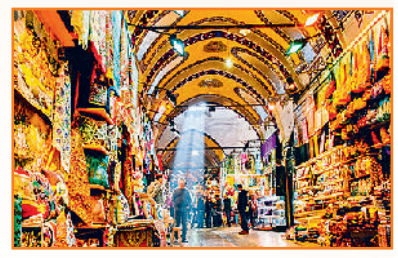

एक शॉपिंग डेस्टिनेशन नहीं है। बल्कि तुर्की की संस्कृति, इतिहास और एशिया-यूरोप के मध्य में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में इस्तांबुल की भूमिका को दर्शाता, जीता-जागता संग्रहालय भी कहा जा सकता है। आज ग्रैंड बाजार दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत बाजारों में से एक है। इसमें 61 से अधिक कवर किए गलियारे और 4000 से अधिक दुकानें हैं। सदियों से व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे ग्रैंड बाजार में लाखों पर्यटक और खरीदार रोजाना पहुंचते हैं। हस्तनिर्मित टर्किश कालीन, रंगीन सेरेमिक की वस्तुएं, सोने-चांदी के आभूषण, चमड़े के सामान के साथ विभिन्न प्रकार के मसाले, आकर्षण का केंद्र हैं। खरीदारी के लिए मोल-भाव करने का प्रचलन भी यहां है, जो आगुंतकों के खरीदारी के अनुभव को अधिक रोमांचक बना देता है। *

डल झील बाजार

भारत के केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर की डल झील पर लगता है यह तैरता हुआ डल झील सब्जी बाजार। डल झील के बीच पानी में थोड़े समय के लिए लगने वाला बाजार कश्मीर घाटी की संस्कृति और सुंदरता का अद्भुत प्रतीक माना जाता है। यह भारत का इकलौता और दुनिया के चुनिंदा अनोखे बाजारों में एक है, जो पानी के ऊपर लगते हैं। इस बाजार का नजारा डल झील की शांत नीली पृष्ठभूमि और पहाड़ों की छाया के बीच कश्मीरी जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के साथ निवासियों के गहरे जुड़ाव को भी दर्शाता है। डल झील बाजार में रोजाना सुबह पांच से सात बजे तक चहल-पहल बनी रहती है। यानी इस बाजार से यदि किसी को सब्जियां खरीदनी हैं, तो उसे सुबह जल्द ही आना पड़ेगा। स्थानीय विक्रेता लोग शिकारा नाव पर सवार होकर इस बाजार में खुद उगाई सब्जियां लेकर बिक्री के लिए आते हैं। वहीं खरीदार भी अपने शिकारा पर सवार होकर आते हैं और चलते हुए एक नाव से दूसरी नाव पर खरीद-फरोख्त करते हैं।

यूनीक पेंटिंग / मनीष कुमार चौधरी

सदियों पहले इटेलियन पेंटर लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाई गई अद्वितीय पेंटिंग मोनालिसा का आकर्षण अब भी बरकरार है। इस यूनीक पेंटिंग से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर एक नजर।

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग मोनालिसा ने कल्पना को जितना मोहित किया है, उतना शायद ही किसी कलाकृति ने किया हो। उनके इस चित्र का रहस्य और आकर्षण 30 इंच X 20 इंच के साधारण फ्रेम से कहीं आगे तक फैला हुआ है। वह किताबों, फिल्मों, गीतों और यहां तक कि एक कला चोरी का विषय भी है। समय के साथ पेंटिंग का वार्निश भले ही धुंधला और पीला पड़ गया हो, लेकिन उनकी भावपूर्ण मुस्कान और रहस्यमयी निगाहें अभी भी चमकती हैं।

कौन थी असली मोनालिसाः हालांकि मोनालिसा की पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं। लेकिन ज्यादातर विद्वानों और कला इतिहासकारों का मानना है कि यह चित्र फ्रांसीसी संभ्रांत महिला लिसा डेल जियोकोंडो का है, जो एक धनी रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी थी। लिसा का जन्म 1479 में हुआ था और उन्होंने 15 साल की उम्र में फ्रांसेस्को से शादी की थी। वह बहुत सुंदर और आकर्षक थीं। लियोनार्डो ने 1503 में मोनालिसा को चित्रित करना शुरू किया और 1517 तक इस पर काम किया। हालांकि यह पेंटिंग डेल जियोकोंडो के घर में कभी नहीं सजी। लेकिन दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हुई।

स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमालः इस चित्र को बनाने में लियोनार्डो ने अपनी विशिष्ट स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें किसी व्यक्ति के फेस पेंटिंग में होंठों और आंखों के किनारों को सूक्ष्म रूप से धुंधला करके धुएं जैसा रहस्यमयी प्रभाव पैदा किया जाता है। इस प्रभाव से चित्र की आंखें विभिन्न भागों पर घूमती दिखती हैं, मुस्कुराहट बदलती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में ऐसे भाव प्रकट होते हैं, जिसको देखकर यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह खुश है या उदास। वह मुस्कुरा रही है या नहीं। रहस्य का यही स्पर्श पेंटिंग के आकर्षण में इजाफा करता है और दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

रहस्यात्मक मुस्कानः मोनालिसा की मुस्कान एक सीधी-सादी, हर्षित मुस्कान नहीं है। इसे अकसर उदासी, गंभीरता या किसी रहस्य का संकेत देने वाली मुस्कान

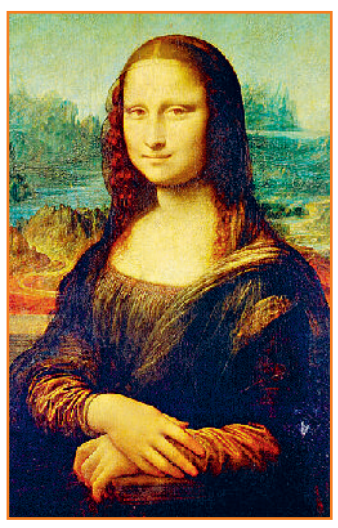

के रूप में वर्णित किया जाता है। यह मुस्कान लियोनार्डो की मानवीय अभिव्यक्ति और भावनाओं की बारीकियों को पकड़ने की असाधारण क्षमता को भी दर्शाती है। इस मुस्कान का पेंटिंग आर्ट पर अमिट प्रभाव रहा है, जिसने अनगिनत कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को इसकी गहराई का पता लगाने और अपनी व्याख्याएं रचने के लिए प्रेरित किया है। इस पेंटिंग को अब तक की सबसे महान भावनात्मक पेंटिंग तक बताया गया है। कुछ इसे परंपरा से परे, परिभाषा से परे, छवि से परे सत्य की तलाश करते हुए पाते हैं। 'तुम्हारी मुस्कान मोनालिसा जैसी है।' यह कहने का मतलब है-रहस्य। यानी कोई मुस्कान रहस्य और जिज्ञासा से कैसे जुड़ जाती है, मोनालिसा की मुस्कान इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसा माना जाता है कि मोनालिसा द्वारा अपनी मुस्कान में अपनी खुशी को पूरी तरह से व्यक्त न करने का कारण उनके पिछले नुकसान का दर्द था। यह सिद्धांत कई शोक संतप्त महिलाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है।

लियोनार्डो की कलात्मकता का कमालः लियोनार्डो ने चीजों को गहराई से देखने की अपनी क्षमता और अध्ययनों को अपनी कला में भी शामिल किया। मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में लियोनार्डो की अंतर्दृष्टि और गहरी समझ, उनकी उत्कृष्ट कृतियों को अमूल्य बनाती है। एक अध्ययन के अनुसार, मोनालिसा के मुंह की मूल तस्वीर 97 प्रतिशत बार 'खुशी' के रूप में देखी गई। यह शोध इस बात के पुख्ता सबूत देता है कि मुस्कान वास्तव में खुशी का चित्रण है। मुस्कान के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और पुनर्निर्माण करके वैज्ञानिकों को इस बात की गहरी समझ मिली कि लियोनार्डो दा विंची अपनी कलात्मकता के माध्यम से दर्शकों की भावनाओं को कैसे प्रभावित करते थे।

चोरी भी हो चुकी पेंटिंगः लियोनार्डो अपनी इस पेंटिंग को 14 साल तक अपने साथ रखे रहे। उनके प्रशंसक कलाकारों और छात्रों ने उनके जीवनकाल में ही इस कलाकृति की प्रतियां बनाना शुरू कर दिया था। यह चित्र अंततः लियोनार्डो के अंतिम संरक्षक फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम के संग्रह में शामिल हो गया। लेकिन 21 अगस्त 1911 को यह पेंटिंग चोरी हो गई। अगले दो सालों तक उसकी चोरी की कहानी एक सांस्कृतिक सनसनी बनी रही। वर्ष 1913 में विंसेंजो पेरुगिया नामक व्यक्ति पकड़ा गया, जिसने इसे चुराया था। इस तरह मोनालिसा वापस अपने फ्रेम में पहुंच गई। *

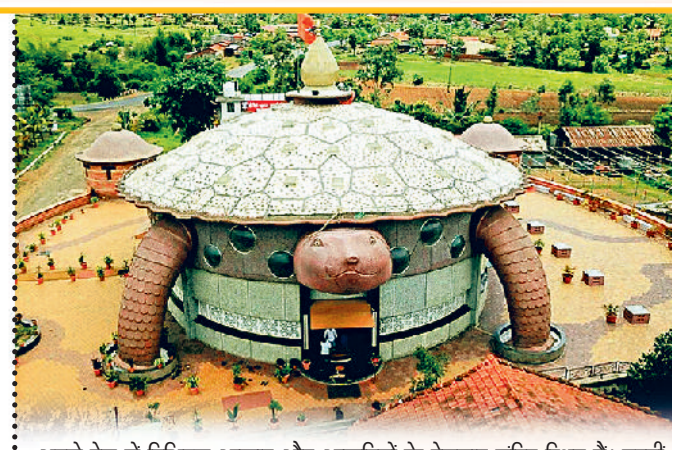

अपने देश में विभिन्न आकार और आकृतियों के बेशुमार मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक कछुए की आकृति वाला अनूठा मंदिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है। इस मंदिर की विशेषताओं और इससे जुड़ी निर्माण कथा के बारे में जानिए।

कछुए की आकृति वाला अजब-अनूठा मंदिर

रोचक / अशोक वाधवाणी

अपने भारत देश में बहुत सारे ऐसे अद्भुत, अनूठे मंदिर हैं, जिन्हें देखने वाला मंत्रमुग्ध होकर निहारता रह जाता है। इनकी स्थापत्य कला का नायाब नमूना हर किसी को अचरज से भर देता है। कुछ की संरचना इतनी भव्य और अनूठी है कि उसे देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। कुछेक मंदिर तो ऐसे हैं, जो आकार में छोटे हैं, लेकिन उनमें लोगों को आकर्षित करने की भरपूर क्षमता है। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर पश्चिम

अपने अनोखे स्ट्रक्चर के कारण प्रसिद्ध है यह मंदिर

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के पैजार वाडी नामक छोटे से स्थान में स्थित है, जो कि पन्हाला हिल स्टेशन के निकट है। कोल्हापुर-रत्नागिरी रोड पर, कोल्हापुर से महज 25 किमी. की दूरी पर बने इस मंदिर की विशेषता है, इसका कछुए की अनोखी आकृति का होना। कछुआ आकृति वाला दूसरा कोई मंदिर पूरे महाराष्ट्र में और कहीं नहीं है।

निर्माण से जुड़ी मान्यताः इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यता के अनुसार एक समय में यहां पर श्रीदत्त चिले महाराज के नाम से एक प्रसिद्ध संत हुआ करते थे। वे अपने अनुयायियों के साथ अलग-अलग जगहों का भ्रमण किया करते थे। कोल्हापुर शहर के आस-पास की जगहों जैसे- टेंबलाई, नृहिंहवाड़ी, कोकण क्षेत्र में जोंध मारुति आदि के अलावा पंढ़रपुर जैसी धार्मिक जगहों पर वे अकसर जाते रहते थे। वे जहां भी जाते थे, उस इलाके में रहने वाले कछुओं को अवश्य याद करते थे। किसी स्थान पर पहुंचकर वे जब अपने अनुयायियों से कहते कि कछुआ यहीं-कहीं होना चाहिए, तो उनके शिष्यों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती। उन शिष्यों के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, जब गुरुदेव के कहे स्थान पर कछुए का दर्शन हो जाता था। श्रीदत्त महाराज का कछुए के प्रति इतना लगाव-जुड़ाव क्यों था? इसकी सही-सही जानकारी नहीं मिली। लेकिन उनके अनुयायी और शिष्य मानते थे कि महाराज जहां कह देंगे, वहां कछुआ जरूर दिख जाता था। वर्ष 1986 में उनके देह त्यागने के बाद उनकी समाधि बनाई गई। मंदिर ट्रस्ट के सारे सदस्यों ने योजना बनाई कि चिले महाराज का कछुए के प्रति आकर्षण को ध्यान में रखकर कछुए की आकृति वाला मंदिर बनवाया जाएगा।

मंदिर की संरचना-विशेषताः कुल 5000 स्क्वायर फीट एरिया में बने इस मंदिर की ऊंचाई 51 फुट, लंबाई 60 फुट और चौड़ाई 80 फुट है। इसकी विशेषता यह है कि मंदिर के निर्माण में किसी भी खंबे का सहारा नहीं लिया गया है। इसकी खूबियों, खासियतों को ध्यान में रखकर ही एक अमेरिकन संस्था ने इसे वर्ष 2005 'आउटस्टैंडिंग स्ट्रक्चर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

ऐसे किया गया निर्माणः इस मंदिर की योजना को मूर्त रूप देने के लिए पुंडलिक राव इंगले ने विशेष प्रयास किए थे। इसे बनाने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आर्किटेक्ट्स द्वारा डिजाइनें मंगाई गईं। आखिरकार 15 में से एक आर्किटेक्ट प्रमोद बेरी की डिजाइन का चयन किया गया। इस तरह मंदिर का निर्माण पूरा किया गया। इस मंदिर के अंदर ही चिले महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो श्रद्धालुगणों की आस्था का केंद्र है।

लगता है श्रद्धालुओं का जमघटः ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष बाबा साहब चव्हाण के अनुसार देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का तांता, दर्शन करने के लिए इस मंदिर में लगा रहता है। कई विशेष धार्मिक अवसरों जैसे- श्रीदत्त जयंती, चिले महाराज जी की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, हर माह की अमावस्या, गुरु पूर्णिमा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक अवसरों पर कई कार्यक्रमों का यहां आयोजन किया जाता है। *

जो फिल्में कॉमर्शियली सक्सेसफुल हैं, जरूरी नहीं कि वे कालजयी फिल्में भी हों। ऐसे ही यह भी जरूरी नहीं कि सदाबहार कालजयी फिल्मों का बॉक्स-ऑफिस रिकॉर्ड भी अच्छा रहा हो। बॉलीवुड की कुछ क्लासिक और कॉमर्शियली सक्सेसफुल फिल्मों के फंडे पर एक नजर।

बॉलीवुड की क्लासिक फिल्में वर्सेस कॉमर्शियली हिट फिल्में

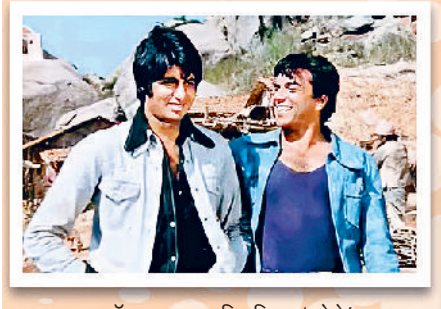

ब्लॉकबस्टर सुपरहिट फिल्म 'शोले'

कल्ट क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम'

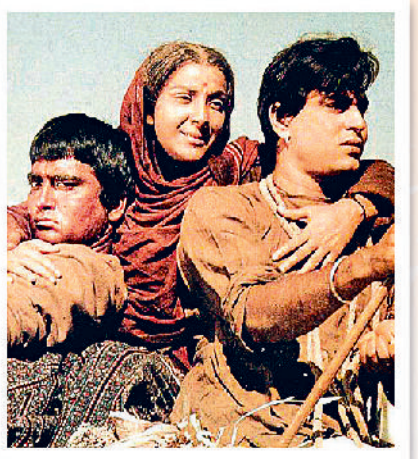

कालजयी फिल्मों में शामिल है 'मदर इंडिया'

सिल्वर स्क्रीन / हेमंत पाल

कालजयी फिल्में वे होती हैं, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय जीवन और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये फिल्में दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। हालांकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कारोबारी सफलता भी बहुत मायने रखती है, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना।

कॉस्टिंग-इनकम-सक्सेस का फंडाः यह बात सच है कि किसी भी फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन या फिल्म से इनकम के आधार पर उसे हिट या फ्लॉप का तमगा दे दिया जाता है। फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना अधिक बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी सफलता का आकलन किया जाता है।

बॉक्स ऑफिस पर सक्सेस फैक्टर्सः बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की सक्सेस के अनेक फैक्टर्स होते हैं। आज के दौर में फिल्में अकसर जबर्दस्त एडवर्टाइजमेंट के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी मैजिकल अट्रैक्शन पैदा किया जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह फंडा हर फिल्म के लिए सफल नहीं होता, इसलिए क्योंकि ये इफेक्ट टेंपरेरी हो सकते हैं, जो ऑडियंस को एक बार थिएटर तक खींच सकते हैं, लेकिन अगर फिल्म कंटेंट में दम नहीं है तो कुछ ही समय में सारा प्रचार का जादू फेल भी हो जाता है।

क्लासिक फिल्मों की खासियतः सवाल यह भी है कि अधिक निर्माण लागत और अच्छी-खासी कमाई वाली सभी फिल्में क्या लंबे समय तक दर्शकों को याद रह पाती हैं? इसका जवाब है, शायद नहीं, क्योंकि फिल्में महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि अपने कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में भी आईं, जिसने व्यावसायिक रूप से बड़ी सफलता पाई, लेकिन उन फिल्मों की कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं कुछ फिल्में कम बजट में बनीं, कम चलीं, लेकिन कालजयी हुईं। करोड़ों का कारोबार करने वाली सभी सुपरहिट फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पातीं क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थाई सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर किसी फिल्म का हिट होना, अकसर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन कालजयी फिल्में मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं।

बहुत कम बनती हैं कालजयी फिल्मेंः सौ सालों से ज्यादा लंबे भारतीय फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फिल्में अंगुली पर गिनी जा सकती हैं, जो हर दौर में पसंद की जाती रही हैं। 'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीकी नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं।

कालजयी फिल्मों के जरूरी तत्वः अगर फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरूरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

कॉमर्शियली फ्लॉप पर क्लासिक 'मेरा नाम जोकर'

कुछ कालजयी हिंदी फिल्मेंः बॉलीवुड की कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अपने रिलीज के दशकों बाद भी अपना एक अलग मुकाम रखती हैं। इन फिल्मों को हर दौर में हर पीढ़ी के दर्शकों का प्यार मिला। 'कागज के फूल', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'बॉबी', 'शोले', 'दीवार', 'उमराव जान' जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। इन फिल्मों की गिनती बॉलीवुड के क्लासिक कल्ट के रूप में होती है। खास बात यह है कि इन फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से भी सफलता के झंडे गाड़े थे।

कई फिल्में अपने समय में व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं, लेकिन बाद में उन्हीं फिल्मों को बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक का दर्जा मिला। उदाहरण के तौर पे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला' जैसी फिल्मों को देखा जा सकता है।

ये वे फिल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं। *